लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

जुलाई-सितंबर, 2019

बरस : 42 अंक : 4 पूर्णांक : 144

संपादक
श्याम महर्षि

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक
राजस्थानी साहित्य-संस्कृति पीठ
राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803
www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com
ravipurohit4u@gmail.com

ग्राहक शुल्क

पांच साल : 500 रिपिया, आजीवण : 1000 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

इण अंक में

संपादकीय

राजस्थानी भासा नैं मान्यता मिल्यां ई हिंदी सिमरध हुवैला — *श्याम महर्षि* — 3

आलेख

राजस्थानी बाल साहित्य अर मनोविग्यान — *मीनाक्षी लक्ष्मीकांत व्यास* — 4

राखी धागां रो तिंवार — *नरपतसिंह सांखला* — 9

कहाणी

हेत रो उजास — *इंजी. आशा शर्मा* — 12

साख री डोर — *सावित्री चौधरी* — 16

अंगूठै री ताकत — *किशनलाल साध* — 20

अनूदित कहाणी

इंजेक्शन (मूळ : सुरेश व्यास अेडवोकेट) — *उल्थो : श्याम महर्षि* — 22

लघुकथा

भरपाई / उडीक — *अर्जुनदान चारण* — 29

बीरोसा — *मानसिंह राठौड़ 'भुरटिया'* — 30

सफळता / महानता / मन री सुंदरता — *राजेश अरोड़ा* — 31

पौराणिक कथा

माया रो लटको — *हंसराज साध (रांकावत)* — 33

कविता

नौ कवितावां — *सुरेन्द्र सुन्दरम्* — 36

मुधरा बोल / काची काया / रखपून्यूं री भेंट / मांयली पीड़ — *डॉ. साधना जोशी 'प्रधान'* — 38

हियै रो पंखेरू / मोत्यां बिचली लाल / आतम परकासै — *सरोज देवल बीठू* — 40

गजल

दो गजलां — *विनोद सोमानी 'हंस'* — 42

चार गजलां — *मोहन पुरी* — 43

गीत

माटी आज बुलावै रे / जय जय जय राजस्थान — *राजेन्द्र स्वर्णकार* — 46

हेली म्हारी / धरती फोरयो पसवाड़ो / मनड़ै री धूणी — *मनीषा आर्य सोनी* — 47

सरद पून्यूं का चांद / छोटी-सी चिड़कली — *अभिलाषा पारीक 'अभि'* — 49

व्यंग्य

आस निरास भई — *प्रो. (डॉ.) अजय जोशी* — 51

कूंत

मुसाफ़िर रो व्यंग्य-सफ़र : सत्त बोल्यां गत्त है — *शंकरसिंह राजपुरोहित* — 53

राजस्थानी भासा नैं मान्यता मिल्यां ई हिंदी सिमरध हुवैला

राजस्थानी भासा री संवैधानिक मान्यता रो मुद्दो भारत सरकार रै गृह मंत्रालय में विचाराधीन पड़्यो है। राजस्थानी रै सागै भोजपुरी अर भोटी भासा नैं संविधान री आठवीं अनुसूची में जोड़ण रो प्रस्ताव है, जिण माथै बगतसर निरणै लेवणो जरूरी है। राजस्थान रा मुख्यमंत्री अशोक गहलोत भी राजस्थानी भासा री सिमरधता रो हवालो देवतां थकां भारत रा प्रधानमंत्री नैं कागद लिख'र राजस्थानी नैं भारतीय संविधान री आठवीं अनुसूची में जोड़ण री अरज करी है। उणां लिख्यो है कै बरस 2003 में उणां री कांग्रेस सरकार राजस्थान विधानसभा सूं राजस्थानी री संवैधानिक मान्यता रो संकळप प्रस्ताव सर्वसम्मति सूं पास कर'र केंद्र सरकार नैं भिजवायो हो, जिण माथै 16 बरसां बाद भी अजै निरणै नीं करीजणो दुरभागपूरण है। इण वास्तै राजस्थानी नैं संवैधानिक मान्यता देवण रो निरणै केंद्र सरकार नैं बेगै सूं बेगो लेवणो चाईजै।

दरअसल राजस्थानी भासा री मान्यता रै आंदोलन सूं जुड़्या लोगां सूं राजस्थानी रा विरोधी लोग घणा सक्रिय लागै। लारलै बरस अै लोग गृहमंत्री राजनाथ सिंह सूं मिल'र राजस्थानी अर भोजपुरी नैं मान्यता मिल्यां हिंदी रै कमजोर होवण रो गळत हवालो देय'र आं दोनूं भासावां नैं संवैधानिक मान्यता देवण रो विरोध कर्‌यो हो। साची बात तो आ है कै अै लोग हिंदी रा हिमायती नीं, हिंदी रा दुस्मण है। हिंदी, हिंदू अर हिंदुत्व सूं मोहग्रस्त केंद्र री भाजपा सरकार भी इण बात माथै गौर नीं कर रैयी है, पण भारत रा आं राजनेतावां नैं इण बात रो ठाह नीं है कै प्रादेसिक भासावां नैं सम्मान मिल्यां ई हिंदी सिमरध हुवैला। हिंदी साहित्य में राजस्थानी, ब्रज, भोजपुरी, अवधी अर खड़ी बोली रो मोकळो साहित्य है जको विश्वविद्यालय रै पाठ्यक्रम में पढाईजै। कबीर, मीरां, सूर, तुलसी सगळा आप-आपरी मातृभासा में काव्य रच्यो है, नीं कै हिंदी में।

भारत रा लूंठा भाषाविद् सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या अर शिक्षाविद् मदन मोहन मालवीय तक राजस्थानी भासा री सिमधरता नैं स्वीकारतां थकां कैयो है कै राजस्थानी नैं मान्यता मिल्यां सूं हिंदी कमजोर नीं बल्कै औरूं सिमरध हुवैला। पण आं राजनेतावां नैं आ बात कुण समझावै? रामजी, केंद्र सरकार नैं सद्‌बुद्धि देवै, आ ईज अरदास है।

—श्याम महर्षि

मीनाक्षी लक्ष्मीकांत व्यास

राजस्थानी बाल साहित्य अर मनोविग्यान

टाबरां सारू सिरजण करणो जे कोई सौरो काम समझै तो वा उणरी भूल है। सै-सूं मुस्किल होवै टाबरां सारू लिखणो अर उणसूं ई घणो अबखो काम है टाबरां रै मुजब लिखणो। वा रचना जिणनै टाबर अंगीकार करै जिणसूं टाबरां रो मन बिलमै, वा ईज सांतरी रचना होवै।

बाल साहित्य रो मतलब टाबरां सारू, वांरै मन रा भावां रै मुजब सरल सबदां में साहित्य रो सिरजण करणो हुवै। टाबर जद कोई पोथी बांचै तो वो कई तरीकै सूं उणसूं जुड़ जावै। कठैई वींनै उणरा चित्राम मन भावै तो कठैई कविता रा बोल उणरै हियै बस जावै। इणी भांत कोई कहाणी या नाटक रै पात्र सूं आपरा वैचारिक संबंध बणाय लेवै अर आ ईज बात बाल साहित्यकार सारू आधार ई होवै अर चुनौती भी।

अठारवीं सदी सूं पैला तांई रै बाल साहित्य रो सरूप न्यारो हो। हर धर्म रा पौराणिक ग्रंथां रा दृष्टांत जिणसूं टाबर रो नैतिक विगसाव होय सकै वै ईज बाल साहित्य रै रूप में उपलब्ध हा। जे लोक साहित्य नैं छोड दियो जावै तो टाबर नैं टाबर समझ'र वांरै मनोरंजन सारू कोई बाल साहित्य सुतंतर रूप सूं नीं हो।

अठारवीं सदी रै मांय शिक्षाविदां में भणाई सारू बालकां रै अध्ययन रा दो तरीका चलन में हा, जिणसूं वै टाबरां रो अध्ययन करता। पैली, दारसनिक साखा अर दूजी बालकां रो खुद रो अध्ययन रोज रै अवलोकन पाण।

1879 में मनोविज्ञान आपरी साखा नैं सुतंतर रूप सूं दर्शनशास्त्र सू अळगो कर लीन्हो, तद साहित्य रा विश्लेषण मनोवैग्यानिक दीठ सूं होवण लागा।

ठिकाणो :
नथावतां री गळी,
तापी बावड़ी, जोधपुर
(राजस्थान) 342001
मो. 9460277423

उण समै ई आ बात खुल'र आयी कै टाबर री खुद री अेक सुतंतर सत्ता है जिणनै स्वीकार करणी चाईजै।

जॉन लॉक, रूसो, हर्बार्ट जैड़ा दारसनिक अर शिक्षाविदां पाण बालकां रै सहज विगसाव नैं सुतंतरता देवण सूं अर बाल-विकास सूं संबंध आळा लेख जद वीं समै री पत्र-पत्रिकावां रै मांय छपिया, तद अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैंड जैड़ा देस बाल-विकास रै अध्ययन नैं महताऊ मानणो सरू करयो। बाल-विकास रै वैग्यानिक अध्ययन नैं विश्वव्यापी बणावण रै ध्येय सूं अमेरिका, जर्मनी, पोलैण्ड, इंग्लैंड, फ्रांस जैड़ा देसां रै मांय अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक समितियां री थरपणा होयी। 1894 में शिकागो में अंतरराष्ट्रीय शिक्षा समिति री थरपणा होयी। इणी समै वै टाबर जका मानसिक तौर माथै थोड़ा न्यारा होवै अर जिणसूं वांरी भणाई, वैवार बीजो प्रभावित होवै, इणरी भी पिछाण होयी। 1891 में मनोवैग्यानिक केंद्र री थरपणा ई होयी।

आं सगळी घटनावां सूं टाबर रै विगसाव रा हर पहलू माथै विद्वानां ध्यान देवणो सरू कीधौ। वांरा सुझाव क्रियान्वित होवण लागा अर इणीज कड़ी रै रूप में टाबरां सारू साहित्य (जको फगत टाबरां नैं ध्यान मे राखता थकां लिख्योड़ो होवै, वांरै माथै थोप्योड़ो नीं होवै) री सिरजणा होवण लागी।

राजस्थानी बाल साहित्य री बात करां तो अठै रै लोकसाहित्य में तो पैला सूं ई बाल साहित्य रचै-बसै। टाबरां रै मनोविग्यान रै मुजब गीत-कहाणियां रो प्रचलन श्रव्य रूप में हमेस ई रैयौ है। जियां—बरसात रै मांय बिरखा रा बादळिया देख'र नेन्हा टाबर गावै :

मेह बाबा आ जा
घी ने रोटी खा जा!
आयौ बाबौ परदेसी
अबै जमानौ कर देसी
ढाकणी में ढोकळौ
मेह बाबौ मोकळौ

आ तुकबंदी टाबरियां में घणी चावी है, कितरी ई पीढियां सूं। इणी भांत नेन्हा-नेन्हा टाबरां सारू तुकबंदी :

कान्या मान्या कुर्र
जाऊं जोधपुर्र्र
लाऊं कबूतर्र्र
उडा देवूं फुर्र्र

अै तुकबंदियां टाबरां री उमर रै मुजब है अर इणसूं इण बाल गीतां में बरतीजी मनोवैग्यानिकता निगै आवै। इणी भांत अेक बालगीत जिणमें रमतां-रमतां मोड़ो व्हैजा अर भाई

आपरी बैन नैं बेगो चालण रो कैवै। बाल मनोवैज्ञानिकता अठै निगै आवै कै जद वो पूरी कल्पना कर लेवै घर में कांई होवैला जे मोड़ो व्हैग्यो तो...

चांद चढ्यो गिगनार
किरत्यां ढळ रयी है जी ढळ रयी है
अब बाई घरै पधार
माऊजी मारैला जी मारैला...

टाबर री दीठ सूं कितरो सांतरो वरणाव कर्‌यो है कै जठै टाबर कल्पना कर लीन्ही कै जद बाबोसा गाळ देवैला तद बडो भाई मना करैला अर कैवैला कै बाईसा नैं गाळ मत देवो वा तो परदेसण है, कीं दिनां बाद जंवाई ले जावैला। अै ओळ्यां :

कोई बाबोसा दैला गाळ
बडोड़ो बीरो बरजैला जी बरजैला
मत दो म्हारी बाई नैं गाळ
बाई म्हारी परदेसण जी परदेसण
आ आज उडै परभात
तड़कलै उड ज्यासी जी उड जासी
सावणियै रा दिनड़ा चार
जंवाईड़ो ले जासी जी ले जासी!

टाबरां रै टाबरपणै नैं ध्यान मे राखतां थकां तुकबंदियां भी बाल साहित्य रै पेटै लोक साहित्य में मिलै। जियां :

सोनै रो बेरो करावो पाळ
पाळ माथै जाळ
जाळ में मटकी, मटकी में डोरा
डोरा सरकिया, म्हैल खड़किया
म्हैलां ऊभा भीमजी
भीमजी वाई गोळी
आई हिरणां री टोळी

अठै रा साहित्यकार भी टाबरां रै टाबरपणै नैं ध्यान में राखतां थकां वांरै सारू साहित्य री सिरजण करी है। राजस्थानी में लक्ष्मणगढ रा बी.एल. माली 'अशांत', ('दूधिया दांत', 'बिलांतियो दादो'), सरदारशहर रा जयंत निर्वाण ('खाग्या बाळणजोगा', 'राजस्थानी अेकांकी'), हनुमानगढ़ रा दीनदयाल शर्मा ('गधै रा सींग', 'बाळपणै री बातां' आद) अर बीकानेर रा अब्दुल वहीद 'कमल' ('हाऊड़ै रो धोरो') आद बाल-साहित्य री सखरी सरुआत करी। बी. एल. माली 'अशांत' तो केई बरसां लग टाबरां सारू सुतंतर राजस्थानी पत्रिका 'झुणझुणियो'

ई निकाळी। आज तो राजस्थानी में मोकळा लेखक टाबरां सारू बरोबर रचनावां लिख रैया है, जिणां में डूंगरगढ रा श्रीभगवान सैनी, सोजत रा अब्दुल समद 'राही', नवनीत राय, बीकानेर रा नवनीत पाण्डे, मुईनुद्दीन कोहरी, डॉ. नीरज दइया, रवि पुरोहित, सुरेन्द्रसिंह शेखावत, डॉ. गौरीशंकर निमिवाळ, महाजन रा डॉ. मदन गोपाल लढ़ा, लूणकरणसर रा राजूराम बिजारणियां, कमल किशोर पीपळवा, जगदीश सोनी आद सामल है। इणी भांत महिला बाल साहित्यकारां में जोधपुर री जेबा रशीद, चांदकौर जोशी, दमयंती जाडावत , बसंती पंवार, केकड़ी (अजमेर) री विमला नागला आद महताऊ नांव है।

राजस्थानी बाल-साहित्य में अेकांकी मोकळा लिखीज्या है अर स्कूली विसय माथै सै सूं ज्यादा अेकांकी लिखीजी है। जियां—'म्हारा गरुजी' री अै ओळ्यां :

सोहन : *(बैठ्यो ई) गुरुजी, म्हैं थांरै खातर आज टींडस्या ल्यायो हूं।*

गुरुजी : *कठै है रे टींडस्या!*

सोहन : *(खड़्यो हो'र) बै तो म्हैं रमेश गुरुजी नैं दे दी जी।*

गुरुजी : *तो ठीक है... हिंदी मांय तन्नै रमेश गुरुजी ई पास करैगा।*

बालक देस रा भावी नागरिक होवै। आंरै चरित्र विगसाव अर नैतिक मूल्यां री थरपणा रो औ ईज समै होवै। आपरी जलमभोम सारू मान-सम्मान री भावना टाबर में होवणी जरूरी है। साहित्यकारां कनै वांरी कलम ईज होवै जकी संस्कार सूंप सकै। रवि पुरोहित री पोथी 'तिरंगो' री अै ओळ्यां, जकी इण भाव री पुष्टि करै :

म्हे भारत रा वीर बालक
म्हे ई देस री ताकत,
जवान-किसान-विग्यान म्हे ई
म्हे ई इण री लियाकत

इणी भांत पोथी शर्मिला ओझा री पोथी 'बालपणै रा गीत' री अै ओळ्यां :

नांव तिरंगे रो लेतां ई
सगळा सीस झुकावां
जन-जन रै कंठां सूं भारत
मां रा गीत सुणावां

इणी तरै बाल साहित्यकार मईनुद्दीन कोहरी री पोथी 'म्हे भारत मां रा लाल' री कीं ओळ्यां आपरी निजर :

म्हारो भारत देस महान है
कैवै सगळा मुल्क जहान है
आन-बान रा मिनख अठै
जग में ईं री पहचाण है

टाबरां नैं जीव जिनावरां सूं घनिष्ठता घणी बैगी होवै अर इणीज मानसिकता नैं ध्यान में राखतां थकां पंचतंत्र री कहाणियां है, जकी पूरै विस्व रै बाल साहित्य रो आधार है :

International companion Encyclopedia of children's Literature (1996) Hunt,Peter(editor) :

The earliest written folk_type tales include the pancharatr from India, which was compose about 200 AD. It may be"the world's oldest. Collection of stories for children."

इणी भांत राजस्थानी साहित्यकारां री भी रचनावां मिलै। राजस्थानी बाल साहित्य में। जियां राजस्थानी बाल कवितावां रै मांय म्हारी धरती पोथी री चिडकली, चूहो-बिल्ली अर पिल्लो, आयोग, पोथी 'म्हे भारत मां रा लाल' री कबूतर, चिड़िया रानी, घोड़ो, चिड़ियाघर, ऊंट, तितली, चींटी, दादी री गाय, कुत्तो इणी जोड़ में रंग-रंगीलो म्हारो देस पोथी री ऊंदर थाणेदार, डेडर, चैत चिड़कली ब्यांव रचावै, 'तिरंगो' पोथी री अचपळो बांदरो, रेलगाडी, चंपकवन में चोर इत्याद जिणरी जोड़ में और भी लेखकां री पोथ्यां है।

कहाणियां रै मांय भी इणी भांत चांदकौर जोशी री चिड़ी अर कागलो, मीकू री चतुराई, पूंछियो रोग अर अेक अक्कल करामत, दीनदयाल शर्मा री कहाणियां काळू कागलो अर सिमली कमेड़ी, घमंडण मछली, गौरीशंकर निमिवाळ री बांदरी री सीख, दमयंती जाडावत री कोयल अर कागलो, जंगल में पोसाल, टूटू... इत्याद केई है।

नीरज दइया री 'जादू रो पेन' अपणै आप ई सहज बाल मनोविग्यान नैं दरसावै। इणी भांत सीख देवणजोग कहाणियां री पोथ्यां में राजेश अरोड़ा री 'संकळप रो सनमान' दुलाराम सहारण री 'क्रिकेट रो कोड' अर गौरीशंकर निमिवाळ री 'पछतावो' महताऊ है। अैड़ी केई सांतरी रचनावां है टाबरां सारू राजस्थानी बाल साहित्य रै पेटै जिणसूं टाबरां रो मनोरंजन तो होवै ई है, पण सागै ही सीख भी मिलै। अेक आलेख मांय मात्र वांरो बखाण संभव कोनी।

राजस्थानी रो बाल साहित्य टाबरां रै मनोविग्यान रै मुजब अर टाबरां री ग्राह्य खिमता रै मुजब है। टाबरां नैं चित्राम घणा सुहावै अर टाबरियां री पोथी बिना चित्राम अधूरी होवै, इणरो भी ध्यान राजस्थानी रा बाल साहित्यकार राख्यो है। सै-सूं महताऊ बात आ है कै अठै रा साहित्यकार इण बात रो ध्यान राख्यो है कै कोई भी कहाणी या कविता रै पाण जबरदस्ती ग्यान ठूंसण रो प्रयास नीं करयो। इण बात सूं भी पक्को व्है जावै कै बाल मनोवैग्यानिकता रो कित्तो ध्यान राख्यो गयो है आं रचनावां में।

⌘⌘

नरपतसिंह सांखला

राखी धागां रो तिंवार

रक्षाबंधन आपणै देस रो अेक पवित्र अर चावो तिंवार है। इण रो आपणै समाज मांय पारंपरिक महत्त्व है। इण दिन बैन भाई रै रक्षासूत्र बांधै। इण खातर औ उच्छब रक्षाबंधन रै नांव सूं चावो है। रक्षाबंधन सावण महीनै री पूनम नैं मनाईजै। इण वास्तै इणनैं आपणै रखपुन्यूं भी कैवै। ज्योतिष ग्रंथां मांय सावण नखत नैं चंद्रमा मानीज्यो है अर जन्नत री उत्पत्ति चंद्रमा रै नखत रोहिणी सूं मानीजै। आयुर्वेद मांय चंद्रमा नैं अमरता यानी कै अमरत जूण रक्षक मानीजै। जिण काळ चंद्रमा हुवै उण बगत रात हुवै, उण बगत आराम हुवै, अमरत अर आराम सूं जूण री रक्षा हुवै। इण रक्षा खातर ई रक्षाबंधन रो औ उच्छब मनाईजै।

उच्छब रै बारै मांय अंगिरा रिसी रो मत है कै अणूतो उछाव-उमाव हुवण रै कारण उच्छब मनाईजै— 'यदोत्साह अंगीरै'। आपणो देस कृषि प्रधान देस है। सावण रै महीनै मांय च्यारूंमेर हरियाळी हुवै। इण सूं सगळां रा मन उछाव सूं भर्‌योड़ा हुवै। इण बगत भाईचारा रा खेत लहरावै। गरीब सूं गरीब भाई री स्थिति ठीक हुवै। भाई मांय बैनां रो हेज अर उछाव हुवै। इण खातर बो आपरी बैनां नैं आपरै घरां बुलावै। बैन भाई रै धागै री राखी बांधै। बा भाई री रक्षा सारू भगवान सूं वरदान मांगै अर भाई नैं आपरो रक्षक चुणै। बा कामना करै कै भाई-भोजाई रो घर-परिवार संतोष सूं, सावण री हरियाळी सूं, धन-धान्य सूं पूरण सदा हंसतो-खिलतो रैवै। भाई भी बैन रो घणो आव-आदर करै। भाई रो आवकारो देख'र ई बैन रो हिवड़ो गद्‌गद हुय जावै, जिणनैं बचपन सूं ई परायो धन मान लियो जावै, उण सूं ईज इसी कर्‌योड़ी विनती कित्ती निरमळ होवती होसी अर उण सूं बांध्योड़ा रक्षा रा धागा कित्ता पवित्र होवता होसी।

ठिकाणो :
5 सी-157,जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर 334003
मो. 9950331707

रक्षाबंधन रै सागै दो लोककथावां बरसां सूं जुड़्योड़ी है। पैली कथा रै मुजब देवतावां अर दानवां मांय भयंकर जुद्ध चालतो हो। दानवां रो पलड़ो भारी पड़ै हो। देवता जुद्ध मांय हार रैया हा। इण खातर उणां री रक्षा खातर बांरी बैनां बांरी कळाई माथै राखी बांधी अर आखिर देवता विजयी हुया।

जूनै इतिहास रै मुजब सब सूं पैली राखी इंद्राणी भगवान इंद्र रै बांधी। ब्रह्महत्या रै पाप सूं इंद्र सुरग रो सासन खोय चुक्यो। इण सूं इंद्र री लुगाई शची घणी दुखी हुयी। देवगुरु बृहस्पति री सलाह सूं उण आपरै पति रै कल्याण री इंछा सूं आदसगती री उपासना कर सगती रै काचै सूत रै तिहरै धागै सूं संजोर उणनैं आपरै हाथ्योड़ै भरतार रै हाथ माथै बांधी। योगसास्त्र रै मुजब इण हाथ मांय पिंगळा नाड़ी हुवै, जकी करमठता अर शारीरिक-मानसिक ऊरजा नैं लावै। इण सूं सगती लेय इंद्र आपरो राज अर मान पाछो हासल कर लियो। औ राखी रो प्रभाव हो।

दूसरी लोकगाथा रै मुजब राक्षसां रो राजा बलि हुवतो। बलि यूं तो घणो परोपकारी अर बलवान हो पण उण रो दबदबो घणो हो। इण खातर भगवान विष्णु नैं वामन रो अवतार धारण करणो पड़्यो। उणां बलि सूं तीन पग धरती मांगी जिणनैं बलि देवण री हामळ भरली। उणां अेक पग मांय पूरी धरती नाप ली, बीजै मांय आकास अर तीजै पग मांय बलि रै शरीर नैं दाब लियो। त्रेताजुग रै अवसान अर द्वापर जुग रै सरू मांय बलि राजा रै रिसी शुक्राचार्य रक्षासूत्र बांध्यो हो। कैवै कै उणी दिन सूं इण उच्छब नैं रक्षाबंधन रै नांव सूं मनाईजै अर बामण रक्षासूत्र बांधण लागग्या। बलि राजा रै रक्षासूत्र बांधण रै विसय में कैयीजै :

येन बद्धो बलिराजा दानवेन्द्रो महाबल:
तेन त्वां प्रतिवधामी रक्षे माचल माचल।

पारंपरिक दसा मांय भाई री रक्षा खातर बैनां राखी बांधै अर भाई बैन री रक्षा रो वचन देवै। मां बेटै रै जुद्ध में जावती बगत रक्षासूत्र बांधती। जूनै काळ मांय कठैई इसो नीं मालम पड़ै कै आ राखी अबला नारी आपरी रक्षा खातर किणी सबळ मिनख रै हाथ मांय बांधी हुवै, इसो प्रमाण नीं मिलै। रूढि रै हाथां खिलौणो बण'र राखी सगती री प्रतीक रक्षिका आपरै मूळ उद्देस्य सूं दूर होवती गयी। नीं जाणै सगती रूपी नारी 'अबला' कद बणी? अर आपरी रक्षा खातर बाप, मिनख अर बेटां माथै निरभर होयगी। सगती नैं सहारै री जरूरत आय पड़ी। बा खुद बोझ बणगी। उणरी राखी अेक बंधण बणगी। प्रेम अर ममता रो औ बंधण काळांतर मांय अेक रूढि बणग्यो, जिणरो मूल्य रुपियां मांय आंकीजै। राखी रो महत्त्व ई बदळग्यो।

मध्यकाळ मांय रक्षा रै पारंपरिक मूल्यां मांय और कमी आयी। इण काळ मांय लुगाई नैं अेक धन मान लियो गयो। उणनैं लूटण लागग्या। इण कारण बा आ राखी आपरी रक्षा खातर आपरै भाई रै हाथ में बांधी। वीर सबद भाई रो पर्याय बणग्यो। राखी रो बंधन घणो महताऊ हुवै, पवित्र मानीजै अर इणरी पवित्रता रो सम्मान हिंदू ई नीं, मुसळमान भी करै। मुगलकाळ

मांय बादसाह हुमायूं अर चित्तौड़ री राणी कर्मावती री कहाणी कुण नीं जाणै? प्रसिद्ध है कै कर्मावती हुमायूं कनै राखी भेज'र गुजरात रै बादसाह बहादुरशाह रै आक्रमण सूं चित्तौड़ री रक्षा करण री अरज भिजवायी। कर्मावती रो भेज्योड़ो रक्षासूत्र देख'र हुमायूं फूल्यो नीं समायो। बो अेक बडी सेना लेय'र धरम री बैन कर्मावती री सहायता खातर चाल पड़्यो अर बहादुरशाह नैं परास्त कर'र बैन री रक्षा खातर भाई रै कर्तव्य रो पालण कर्‌यो।

आधुनिक काळ मांय भी रक्षाबंधन रो तिंवार भाई-बैन रो सब सूं पवित्र तिंवार मानीजै। इण रो महत्त्व भाईबीज सूं घणो हुवै। औ उच्छब भाई-बैन रै पवित्र संबंधां नैं औरूं घणो पवित्र बणा देवै। बैन इण तिंवार री उडीक घणी बेसब्री सूं करै। जित्तो उमाव अर उछाव इण दिन भाई अर बैन रै मन में देखण नै मिलै बित्तो और कठैई नीं लाधै। भाई भी आपरी कळाई माथै राखी बंधा'र गुमेज रो अनुभव करै। राखी री पवित्रता री रक्षा कर'र ई आपां इण रो पारंपरिक महत्त्व बणायो राख सकां हां। इसो नीं हुवै कै रक्षाबंधन रै अरथ-गौरव नैं ईज आपां खोय बैठां। भाई राखी रै बोझ नैं मनीऑर्डर सूं सौ-पचास रुपिया भेज'र आपरै कर्तव्य री इतिश्री नीं समझ लेवै। औ घणो खोटो हुवैला। बैन खातर अेक फूठरी परंपरा हुवै, इण बहानै बैन आपरै मायकै ई होय आवै। बा आपरै अर आपरै घर री ममता रो आणंद अेक बार फेरूं लेय लेवै अर पछै बा अपणै आपनै तरोताजा अर धन्य मानै।

पारंपरिक रूप मांय मनुस्मृति आद मांय जिको भाई नैं बैन री रक्षा रो भार सूंप्योड़ो है, भाई नैं तन-मन-धन सूं इण सारू त्यार रैवणो चाईजै। प्यार अर स्नेह री प्रतीक राखी अमूल्य है। भाई रै कर्तव्य निभावण मांय अक्षम बैन री कळायां बोझ नीं उठा सकै, पण राखी खातर प्रेम सूं कर्तव्य पालण खातर जद भाई आपरो हाथ बैन री रक्षा खातर उठावै तद बैन अैड़ै धीर-वीर भाई माथै आपरी जूण सफळ समझै। नारी राखी नैं अबळा समझ'र नीं बांधै। उणनैं अपणै-आपनैं सगती रो रूप समझणो चाईजै। इण संबंध मांय विश्व इतिहास री पैली पोथी 'ऋग्वेद' मांय महर्षि अम्प्रण री डीकरी वाक् री ओळूं ताजी हुय जावै। बा घणी सगतीवान हुयी। उण मांय लक्ष्मी, सरस्वती अर महाकाळी तीनां री सगती हुयी। इण भांत री सगती री कामना करण वाळी नारी ई राखी बांध सकै, जकी नीं फगत घर-परिवार अर राष्ट्र री अपितु सगळी स्रिस्टी अर सगळा लोगां रै मंगळ री कामना करती। वाक्, गार्गी, मदालसा, विद्या, सरला अर रानी झांसी जैड़ी महान महिलावां री महिमा रै बीच आपां नैं औ रक्षाबंधन रो महताऊ तिंवार मनावणो चाईजै अर बैन खातर भाई कुरबान हुय जावै, इण सूं बडो काम इण संसार मांय दूजो कोई होय ई नीं सकै।

⌘⌘

इंजी. आशा शर्मा

हेत रो उजास

''हे म्हारा सांवरिया! अब अै दिन दिखावण खातर रोक राखी है कांई? लोग सरांवता कोनी थाकता, जिका सुणसी-देखसी तो कांई कैसी? सूरज-चांद-सा म्हारा छोरा साच्यां ई सूर अर चांद ई हुयग्या। रमेश आवै तो दिनेश घर सूं बारै चल्यो जावै अर दिनेश नैं देखतां ई रमेश निकळ जावै। दोन्यूं भाई अेक-दूसरै रो मूंडो नीं देखणो चावै, कियां पार लागसी ठाकुर जी...!'' विमला मिंदर मांय बैठी माळा रा मणका फेरती, पण मन बैरी उडतो-उडतो दिनूगै री बात पर जाय'र अटक जावै।

हुयो यूं कै रमेश री बीनणी रसोई मांय चाय बणावती ही। दिनेश भी अेक कप चाय मांग ली। चाय उकळगी ही। बीनणी इसारै सूं बोली, ''थमो! आ तो छाण ली, दूजो कप बणा द्यूं'', पण दिनेश किसो मान जावै। हाका करतो जाय'र आपरी लुगाई नैं उठा'र लायो। उणीज बगत चाय बणवाई अर पीयां पछै कप पटक दियो। रमेश री बीनणी पछै किसी छोटै बाप री ही। बा ई जद कासण-भांडा करण लागी तो दिनेश रो अैंठ्योड़ो कप छोड दियो। रामायण-सा घर मांय या रोज री महाभारत बंचण लाग रैयी है, कीं रो कीं बिगाड़ नीं हुवै। विमला रो नित रो मरणो है। कीं नैं समझावै, दोन्यूं इकसार। अेक चांद अर अेक सूरज।

ना..ना... दोन्यूं भाई सदा इसा कोनी हा। घणो ई हेत हो दोन्यां बिचाळै। घी-खीचड़ी-सा रळ-मिल'र रैवता, पण जद सूं छोटोड़ो दिनेश तबादला माथै गांव रै कनै आयो है, सारी कहाणी उठै सूं ई सरू हुयगी। कहावत है—घर मांय झगड़ो घाटै रो, कदैई काम अर कदैई दाम। नित रा छोटी-छोटी बातां बतंगड़ बणण लागगी। तिल रा ताड़

ठिकाणो :
ए-123, करणी नगर
(लालगढ), बीकानेर
334001 राज.
मो. 9413359571

अर राई रा पहाड़ हुवण लागग्या। इयां लागै जियां कोइ थिर पाणी मांय कांकरी न्हाख दी। विमला घणो ई अणदेख्यो करणो चावै, आंख्यां अर कान कियां फोड़ लेवै! छोटो-सो घर है, कोई राजा रो महल कोनी। जो हुवै साम्हीं दीखै। आपरै मन नैं बा घणोई समझावै कै मनड़ा थ्यावस राख! ठाकुर जी सब ठीक करसी। आंगळ्यां सूं नख परै नीं हुय सकै, पण हाल तो कीं आसा निजर नीं आवै।

रमेश अर दिनेश, विमला रा दो बेटा। रमेश गांव मांय खेती करतो अर दिनेश अेक स्कूल मांय मास्टर। रमेश खेत रा नाज-दाणा दिनेश नैं पूगावतो अर दिनेश रुपिया-टक्का मां नैं भेजतो। जूण सौरी कटण लाग री ही। छुट्टियां मांय जद दिनेश गांव आवतो तो घर मांय उछब-सो हुवतो। दोन्यूं भाई अर बीनण्यां दूध-मिसरी-सा घुळ-मिल जावता। टाबर आपरी मांवां सूं ज्यादा काकी-ताई कनै रमता। देराणी भाग-भाग'र काम करती अर जेठाणी लाड लडांवती कोनी थाकती। सगळो गांव सरावतो। लोग विमला रै भाग नैं सरांवता, पण इसी निजर लागी कै मत पूछो!

विमला नैं चार दिन पैली री बात चेतै आयगी। चौथ रो बरत हो। छोटोड़ी बीनणी बांयणो काढ'र पग दबायां पछै बडोड़ी बीनणी नैं दो सौ रुपिया दिया।

''कांई रुपिया रो रौब दिखावै!'' बड़बड़ांवती बडोड़ी हाथूंहाथ ई बै रुपिया छोटोड़ी रै छौंरै नैं झिला दिया अर बोली, ''जा, चोकलेट खा लियै।'' सुण'र देराणी रै अेक उठै अर अेक बेठै। बरत करेड़ी रोटी कोनी खायी। आटी-पाटी लेय'र सोयगी। दो दिन मूंडो फुलायां घूमी... हाल तांई भी जेठाणी मूंडै सूं नीं बोल रैयी। सासू विमला लायण कांई करै? जी तो घणो ई घुटै, पण किणनैं कैवै। ठाकुर जी रै साम्हीं रोय लेवै, ''ठाकुर जी, थे ई कीं मारग सुझावो, म्हारो बुढापो कियां पार लागसी।'' विमला आपरो आगै रो भविस सोच'र कांप जावती।

बात भायां-लुगायां बिचाळै तो फेर ई दब्योड़ी-ढक्योड़ी ही, जद टाबरां रै आपसरी मांय खटपट सरू हुयगी तो विमला नैं घर मांय अमूझणी आवण लागगी। बा टाबरां नैं घणा ई समझाया कै बंद मुट्ठी लाख री हुवै, पण कोई बीं री बात नीं सुणी तद बा ठाकुर जी रै भजनां मांय आपरो टेम पास करण लागगी, पण जींवती माखी गिटणी सौरी कोनी ही। विमला रो जीव पाछो उड'र टाबरां री राड़ मांय उळझ जावै।

''भाया! राड़ सूं बाड़ भली। थे दोन्यूं भाई न्यारा हो जावो।'' अेक दिन विमला आपरो फैसलो सुणा दियो।

''ठीक है मा'सा, जियां थे चावो बियां ई होसी।'' रमेश बोल्यो।

''ना-ना! आ म्हैं नीं चाऊं, न आज अर न काल, पण और कोई दूजो रस्तो कोनी अबै।'' विमला, रमेश री बात काट दी।

''मा'सा, थे म्हारै साथै रैवोला।'' दिनेश भी बातचीत मांय आयग्यो।

''ऊपरला कोठा कुण लेसी?'' विमला पूछी।

''मा'सा, म्हैं तो कदै नीचै रा हिस्सा मांय रैया ई कोनी। ऊपर रा तो म्हे ई लेस्यां।'' छोटोड़ी बोली।

''जद तो बस तय होयग्यो, म्हारा गोडा काम नीं करै। ऊपर-नीचै आ-जा नीं सकूं... म्हैं तो रमेश साथै नीचै ईज रैय लेसूं।'' विमला दो-टूक आपरी बात राख दी।

देखतां ई देखतां घर रा दो-टूक होयग्या। दिनेश आपरा डेरा-डांडा ऊपर लेयग्यो अर रमेश आपरी रसोई नीचै राखली। घर रै साथै-साथै मनां मांय भी दरार आयगी। बडोड़ी गाभा सुखावण नैं छात ऊपर जावती तो छोटोड़ी कोठै भीतर बड़ जावती। छोटोड़ी किणी काम सारू नीचै आवती तो बडोड़ी मूंडो फेर लेंवती।

''जुग-जमानै सूं सुणता आयां हां कै आंगळ्यां सूं नख परै कोनी हुवै, पण इयां लागै जाणै बडकां री सगळी बातां कूड़ी निकळगी। खून ई खून रो बैरी हुय रैयो है।'' विमला देखती अर आपरा आंसू पल्लै सूं पूंछ लेंवती।

काल दिनूगै सूं ई दिनेश उल्टियां कर रैयो है। पेट नैं पाणी भी नीं सध रैयो। खावै अर पाछो उल्टी में निकळ जावै। बीनणी घणा ई काढा-उकाळा कर'र दिया, पण पार नीं पड़ी। मां रो काळजो घणो ई कुरळावै, पण गोडा साथ नीं देवै। ऊपर जाय नीं सकै। नीचै सूं ई हाका करै।

''बीनणी! डाक्टर कनै लेयज्या... अरे इब तो रूसणो छोडो रमेशिया! भाई नैं लेयजा अस्पताळ...'' विमला रोवती-कूकमी बोली, पण कोई बीं री बात पर कान नीं धरया। थोड़ी देर मांय स्कूल रा दो मास्टर आया अर दिनेश नैं अस्पताळ लेय'र गया। तीन-च्यार घंटां मांय मूंडो छोटो-छोटो करता पाछा बावड़्या, तो देखतां ई विमला रो काळजो हूक-हूक करण लागग्या।

''हे म्हारा सांवरिया! मैर राखजै...'' विमला माळा रा मणका फेरण लागगी। पण अबकी बार सांवरियो बीं री नीं सुणी।

''मा'जी, डाक्टर कैयो है कै दिनेश री दोन्यूं किडनी फेल हुयगी।'' अेक मास्टर आंख्यां मांय आंसू ल्यांवतो बोल्यो। सुणतां पाण ई विमला रै हाथ सूं छूट'र माळा नीचै पड़गी। मणका बिखरग्या। रमेश सुणी तो मूंडै सूं बोल नीं फूट्या। आज घर मांय दीवो नीं चस्यो। चूल्हो भी ठंडो पड़्यो हो। आखिर है तो भाई... आंगळ्यां सूं नख परै कियां हुवै।

दिनेश कदै घरै तो कदैई अस्पताळ मांय ईलाज करवा रैयो है। हालत संभळ नीं री... हफ्तै मांय दो बार डायलेसिस करवावणो पड़ै। दर्द सूं छटपटांवतो टाबर जद मायत साम्हीं आवतो तो विमला रै मांय कीं बाकी नीं बचतो।

''देवर जी सूं ऊपर-नीचै होणो सौरो कोनी। छोटी! थूं अबै रसोई नीचै ई करलै, ऊपर म्हैं चली जास्यूं।'' अेक दिन बडोड़ी बीनणी बोली।

''ना! कोई ऊपर-नीचै नीं करैला, रसोई अबै अेक ईज हुयसी छोटी! थूं खाली दिनेश री फिकर कर... बाकी सगळी फिकर म्हारी।'' रमेश रै बोलतां पाण ई विमला रै काळजै मांय ठंड बापरगी। पण हाल भी सांवरियो किस्यो थमग्यो। हाल तो परीक्षा बाकी है। डाक्टर अबै जबाब देय दियो। दिनेश री हालत दिनोंदिन गिरती जा रैयी ही। अबै तो कोई दूसरी किडनी देवै जद ई पार पड़सी, पण किडनी देवै कुण? कुण आपरी जान रै साथै खिलवाड़ करणो चावै। रात-दिन बस अेक ई चरचा... किडनी कुण देसी?

''म्हैं देस्यूं किडनी।'' अेक दिन छोटोड़ी बीनणी बोली।

''थारो दिमाग फिरग्यो दीखै! कीं माड़ी बात हुयगी तो टाबरी रुळ जासी।'' रमेश बीं री बात काट दी।

''म्हारो अेक भायलो अहमदाबाद मांय डाक्टर है। म्हैं बीं सूं सल्ला-मसविरो करस्यूं। ठाकुर जी चासी तो कीं-न-कीं बात बणसी।'' रमेश री बात सुण'र विमला नैं कीं थ्यावस बापरयो। रमेश फोन पर बात कर'र अहमदाबाद पूगग्यो। सप्ताह-भर पछै आय'र दिनेश अर बीनणी नैं लेयग्यो। इण बिचाळै फोन पर भी घणी बातचीत कोनी हुवती। बस! इत्तो ई कैवतो कै कोसिस कर रैया हां। विमला रात-दिन छोरै री सलामती खातर ठाकुर जी रै साम्हीं बैठी रैवती। बडोड़ी बीनणी दिनेश रै टाबरां नैं आपरी लूगड़ी मांय ढांप लिया।

तीन महीनां पछै जद सगळा गांव आया तो दिनेश आछो-भलो दिखण लाग रैयो हो।

''औ चमत्कार कियां हुयो बेटा!'' विमला पूछ्यो।

''दिनेश री किडनी बदळ दी।'' रमेश बोल्यो।

''किडनी कुण दी, थूं? कै बीनणी? बतायो ई कोनी।'' बडोड़ी री आंख्यां मांय डर रा डोरा चिलकण लागग्या।

''म्हारै भायलै रै अस्पताळ मांय अेक मरीज हो, जीं रो दिमाग मर चुक्यो हो... यानी 'डेड ब्रेन' रो केस हो। बीं रो बल्ड बी ग्रुप दिनेश रै ब्लड सूं मैच करग्यो। चोखी बात आ रैयी कै बीं रै घरवाळा लोग सात लाख रुपिया मांय किडनी देवण खातर राजी हुयग्या। सरुआती तीन महीनां मांय इन्फेक्शन रो घणो डर रैवै, ईं खातर दिनेश नैं अस्पताळ मांय ई राख्यो। थांनै खबर करतो तो सब परेशान हुय जावता।'' रमेश बतायो।

''पण सात लाख रुपिया! कठै सूं लायो?'' विमला रो मूंडो खुल्लै रो खुल्लो रैयग्यो।

''म्हैं म्हारै हिस्सै रो खेत बेच दियो।'' रमेश धीरैक बोल्यो।

घर मांय चुप्पी पसरगी

''अब खास्यो के?'' बडोड़ी बीनणी बोली।

''भाई जींवतो रैसी तो इसा घणा ई खेत कर लेस्यां। जे कीं हुय जावतो तो खेत रो कांई करता?'' रमेश रै बोलतां सारू ई दिनेश रै माथै ऊपर हाथ धर दियो। इयां लाग रैयो हो जियां रमेश उणरै बाप री ठौड़ ऊभो है।

''बडेरा साची कैवता, आंगळ्या सूं नख परै नीं हुवै।'' विमला ठाकुर जी रै साम्हीं जाय'र हाथ जोड़ दिया।

हेत रै उजास सूं घर मांय चानणो हुयग्यो। आज घर में उच्छब रो माहौल हो।

⌘⌘

सावित्री चौधरी

साख री डोर

टेसण जावण खातर उण ओला कार टैक्सी फोन कर'र बुलाई अर टेसण जाय पूगी। ड्राईवर नैं किरायो देय'र बा पूछताछ आळी खिड़की कनै जाय'र पूछ्यो तो ठाह लाग्यो कै जयपुर जावण वाळी रेल तो डेढ घंटो लेट है। उण भीड़ में गेलो बणायो अर अणमणी-सी प्लेटफारम माथै धरी अेक बेंच माथै जाय बैठी। माथो दरद सूं फाट रैयो हो। सिरदरद री गोळी लेवणी पड़सी। आ सोच'र उण बैग खोल्यो। मोबाईल माथै निजर पड़ी। मैसज... मैसेज जिणनैं बा केई दफै पढ चुकी है, पण हिरदै मांय माच रैयी ठाडी घ्यारी रै कारण मोबाईल रो बटण दबा'र बा ओज्यूं बीं मैसेज नैं पढण लागी :

एस.एम. अस्पताळ
वारड नं. 13, जयपुर
सिंतबर, 2018

म्हारी मरवण,

तनैं मरवण कैवण रो हक तो म्हैं बरसां पैलां ई खो चुक्यो हूं, माफ करी। म्हारै बचण री आस नीं है कतई। जिंदगाणी रो दीयो बुझण वाळो है। बस, तनैं निजरभर देखण खातर ई प्राण तड़फड़ा रैया है। तूं बेगी पूगगी तो म्हारा प्राण सौरा निसरैला। आ जासी तो अैसान होसी। पतो ऊपरनै लिख्यो है।

थारो गुनैगार, सुधीर

जद आपां कदै सोचण वास्तै सोचां हां, तद ई कीं विसेस सोच सकां हां। नींतर बाधू बातां ई सोचता रैवां हां। गळती कठै हुई ? किणरी ही ? औ विचार बीं रै दिमाग में बीजळी ज्यूं चमक्यो। बा, पढ्यै-लिख्यै, समझदार अर आछै परिवार री खूब पढी-लिखी बेटी है। घर

ठिकाणो :
29, सिंधी कॉलोनी
आदर्श नगर, जयपुर-4
मो. 9414377767

री अेकूकी बेटी। ईं वासतै मां-पापाजी रो बेथाग लाड-कोड मिल्यो। पापाजी कॉलेज में प्रोफेसर हा। खरचै सूं बेसी ही तनखा। ब्यांव रै दस बरसां पछै भोत ई पूजापाठ, देई-देवतावां री मानता अर ईलाज रै पछै जलमी ही बेटी। नाम राख्यो चपलता। मां-पापाजी बेटी नीं, बेटै सूं बेसी समझी। सुतंतर विचारां रो खुलोपण बीं नैं मिल्यो पापाजी सूं।

बा रिटायर होवण सूं पैलां ई बेटी नैं परणा दी। छोरो सुधीर अेक कंपनी में हाकम हो। देखण में ठीकठाक। मां-पापाजी तो अेक अेक्सीडेंट में चालता रैया। परिवार रै नांव माथै कीं आंतरै वाळा भाईबंध रै टाळ और कोई नीं हो बीं रो।

धणी कंपनी में चल्यो जावतो, तो बा अेकदम अेकली हो जावती। कोई और नीं हो घर में, जिण सूं बा हथाई कर'र टेम बिता लेंवती। टी.वी. देख'र अक जावती। कोई किताब पढण में भी ज्यादा मन नीं लागतो।

भायल्यां भी नौकरी अर आपरै घर-टाबरां में रूंधी रैवै है। मोबाईल माथै भी बात करण री बेल कोनी है बां कनै। बगत हो जिको बितायां नीं बीतै हो। करै तो कांई करै, कीं समझ में ई नीं आवतो।

जद रात नैं धणी बांवां में लेंवतो तो पलभर में ई सगळै दिन रो अेकलापणो भूल जावती। बां जोस भर्‌यां छिणां में जद बा आपरै गोरै रंग, लांबै केसां, मदभर्‌या नैण, पतळा होठां अर दाड़म जिसा सूंणा दांतां री तारीफ सुणती तो इतराय'र कैवती, ''सफा कूड़ बोल रैया हो थे।''

''नईं, साची अेकदम साची। थारै जिसी फूठरी गणगोर-सी छोरी म्हैं तो पैलां देखी कोनी कदै भी।''

''सगळा मरद आ ई कैवै है।''

''थारै सूं कुण-कुण कैयो?''

''केई जणा कैयो।'' आ कैय'र बा बिदक'र आंतरै खड़ी हो जावती। ज्यादा मीठो भी चोखो नीं लागै। कीं महीनां में ई धणी में अेक खास तरै रो बदळाव आयग्यो। बो जोड़ायत सूं कीं तण्यो-तण्यो रैवण लागग्यो। जद-कद ई बो बीं नैं बिना बात ई दकालण लाग्यो—रीस भर्‌यो। बजार या किणी रै सगाई-ब्यांव सूं पाछा आयां फेर बा धणी री बांवां में जावण रै इरादै सूं डबलबैड माथै अड़'र बैठती, तो बो मूंडो फूला'र पीठ फेर लेंवतो।

बीं रै हिरदै में ठाडी घालमेल माच जावती। बा सब समझै है कै धणी रै ईं लूखै बरताव रै लारै अेक वेदना है, पीड़ा है। खुद रै मामूली होवण री। सागै ई कठै प्रेम भी है, अपणायत भर्‌यो प्रेम, जिको दब रैयो है, बीं रै फूठरापै री आभा सूं।

केई दफै उण कोसिस भी करी। धणी नैं मनचायै सांचै में ढाळण री। खुद रै व्यक्तित्व नैं दाबणै री। पण बीं रो चिन्होक भी असर नीं होयो—धणी माथै। क्यूंकै बीं रा पैलड़ा संस्कार उठ खड़्या होवता। बां सिद्धांतां रै खिलाफ, जिका बीं रै मन कदैई नीं मान्या। उमर रो बो सुरंगो जुग जियां तावड़ै री तर्‌यां आयो अर पछै ठैर्‌येड़ी छियां, गैरी छियां में बदळग्यो।

झुझळ री पड़त-दर-पड़त बीं रै अंतस मांयनै जमती गई। जियां निरबाध गति सूं बैंवती नदी बरसाती पाणी रै आय'र मिलण नैं बेबस होज्या है, आपरै किनारां री तै हदां नैं लारै छोड'र च्यारूं कानी फैलण सारू। इसी ई अेक सिंझ्या...

''सुणै है के?''

''हां...।''

''आज कठै गई ही?''

''इंटरव्यू देवण नै।''

''किण रो?''

''लेक्चरार रो।''

''क्यूं?''

''घर में अेकली बैठी-बैठी अक जाऊं, ईं खातर। सोच्यो...''

''के सोच्यो? दूजी लुगायां भी तो है, जिकी घर में ई रैवै है। इतरो बडो फैसलो तूं म्हारै सूं पूछ्यां बिना ई ले लियो, मन मरूदी होय'र?''

''क्यूं... हरेक बात पूछणी पड़सी?''

''हां, औ घर म्हारो है।''

''तो के म्हारो कोनी?''

''है, पण घर में रैवणो है तो म्हारी मरजी सूं चालणो पड़सी।''

''म्हैं थांरी दासी, दबैल अर मोहताज कोनी हूं, कैयो तो बैठगी, कैयो तो खड़ी होयगी। जद जी करै कनै बुला ली, जद चायो गुमसुम होय'र पूठ फोर'र सूयग्या।''

इयां जद-कद ई जबानी जुध छिड़तो रैयो, तकरार बधती गई। हिरदै रा सक अर आसंकावां सवाल-पड्डत्तर सूं बारै निसरग्या। सुर ऊंचै सूं ऊंचा, करोत-सा पैणा होवता गया। किरोध दिमाग माथै जा चढ्यो। इणरै पछै तो दोनां रै गरब-गुमराई में सागीड़ो बट चढग्यो। समै रो आंतरो भी बधतो गयो। किरोध री फांफ बीं रो गरब-गुमान सैह नीं सक्यो। साख री तरेड़ चौड़ी होय'र खाई बणगी अर दोन्यां रा गेला होग्या न्यारा-न्यारा।

फेर तो बै मिल्या ई कोनी। पण हां, कदै-कदैई कीं उडती खबरां चपलता नैं सुणीजी जरूर। पण बां में कीं विसेस नीं हो, जिको हो बा पैलां सूं जाणती ही। पण आज मोबाईल माथै चाणचक आयै मैसेज बीं रै हिरदै में कियां भूचाल मचा दियो! उण बीं मैसेज नैं आयो-गयो करण री घणी कोसिस करी। मन नैं भी काठो करणो चायो। दूजै कामां में मन नैं बिलमावण री आफळ भी करती रैयी। बां सवालां रा जबाब देवण सूं डरपती रैयी, जिका अेकांत में बा खुद सूं पूछ्या करती ही। बै ई सवाल टेसण माथै बेंच पर बैठी रै आर-बार कर फिरग्या बीं रै।

आज इत्तै सालां पछै धणी क्यांभी बुलाई है बीं नैं? के बच्यो है बां दोन्यां रै बिचाळै अबै? के है जिको बीं रै मांयन, बीं रै खिलाफ चाल रैयो है? क्यूं बा सूक्यै पत्तै दांई धणी कानी

खींची चली जा रैयी है। क्यूं मरी जा रैयी है बीं मिनख वास्तै जिकै कदैई बीं रै जीवण-मरण री सुख तक नीं ली ? क्यूं धणी रो चैरो आंख्यां साम्हीं आ-जा रैयो है ? टूटती सांसा, उडीकती आंख्यां क्यूं आकळ-बाकळ कर रैयी है उणरी आतमा नैं बुरी तरै सूं।

बा क्यूं जावै ? क्यूं मिलै ? बीं रै जावण सूं के हो जासी ?जिको तै है, बो तो होय'र ई रैसी। फेर क्यूं झुळसै बीं वेदना मांय, जिकी धणी नैं मरतां देख'र बीं नैं झेलणी पड़सी।

के आ फगत हमदरदी है, मिनखता है, जिण बीं नैं घर सूं लाय'र टेसण री बेंच माथै बैठाय दी या कीं और... या बां पलां रो सुख, जिको बीं नैं आपरै धणी री बांवां में मिल्यो। नईं, आ न तो हमदरदी है अर ना ई बो देहसुख, जिको बीं नैं धणी सूं मिल्यो। औ तो कीं और है।

ऊंडो है... भोत ई ऊंडो, जिणनैं समझणो बीं रै खातर सौरो कोनी है, दौरो है। भोत ई दौरो। हां, स्यात अगन साम्हीं लिया फेरा या हर हाल में संग-साथ निभाणै रा कोल-करार रो तगादो, या धणी-जोड़ायत रै साख री डोर है, जिण बांनै हमेसा बांध्या राख्या।

जद भेळा हा तद भी अर जद अलग हुया तद भी जकड़्या राख्यां। बेसक साख री डोर समै रै सागै कमजोर तो हुई, पण टूटी तो कोनी।

धुंध कीं छंटी। दरसाव पैलां सूं कीं ज्यादा साफ होवण लाग्या।

जद रेल रै आवण री घोसणा सुणीजी अर प्लेटफारम माथै रेल आ खड़ी हुई, तो सवारियां हाथ में पकड़्यै टिगट माथै आप-आपरै डब्बै रा नंबर देखती ऊंली-सूंली भाजण-सी लागी। टेसण माथै भोत ई कळबळाट माचग्यो। चपलता भी आपरै डब्बै रो नंबर देखती हाथ में अटैची उठायां बेगी-बेगी चाल्यां जा रैयी ही।

⌘⌘

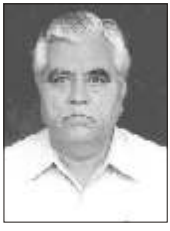

किशनलाल साध

अंगूठै री ताकत

ओ सगळां नैं ठा हो कै आदू जलम रो दुखी हो। पण आपरो खेती रो धंधो कर'र आपरै छोरां बूंदै, पांडू अर रत्तै नैं स्हैरां में पढा'र राज री नौकरी लगाय दिया। पण पांडू की थोड़ो कंवळो हो। पढाई माड़ी करतो। इण खातर आपरी लुगाई पानी नैं नौकरी छोडा'र पांडू नैं राज रो नौकर बणायो। पण आज सुराज मांय राज गांव अर स्हैर मांय कीं फरक कोनी राखै। भलो हुवै बापू अर बाबा ससाहेब भीमराव जी रो जका कानून बणाया। बांरा ई कानून में संसोधन कर'र राज नैं बूढा-ठेरां री निगै राखणी चाईजै। जकै टाबर नैं बांरी जगै नौकरी लगावै उणसूं दरख्वास्त लिखावै कै बो पड़ता दिनां में माईतां री टहल-चाकरी करैला, नींतर राज नौकरी पाछी खोस लेसी। ओ ओळियो लिख'र पांडू राज री पक्की नौकरी लागग्यो।

आदू आपरा तीनूं छोरां नैं परणा दिया। तीनां री जोड़ी री बहुवां आयगी। अबै पांडू, आदू रो सहारो हो। गांव सूं स्हैर आवतो-जावतो रैवतो। इण लठ गड़ागड़ी मांय बो चालतो रैयो। अबै पानी अेकली रैयगी। अबै बारह महीनां सूं बा पांडू कनै स्हैर में आयगी। पांती रो हवालो देय बा तीनां कनै गई। पण अेक पारकी भोमका मांय बीं नैं लेयग्या। बठै पानी रो मन नीं लाग्यो। दूजै रै टाबर-टोळी री फौज कीं बेसी, इण वास्तै बो कंवळो हो। पण पानी अर पांडू कनै अेक छोरो। पण लुगाई हाजरी नीं भरै, ना बगत पर रोटी पोवै। ना चाय बणावै, ना ई गाभा-लत्ता धोवै। ना मांचो खींचै ना बिछावणा सांवटै। आखो दिन बड़बड़ कर पानी नैं जलील करती रैवै।

अबै पानी कांई करै। बा कायी होयगी। अबै कांई करै! मोट्यार तो सुरगां सिधारग्यो। आपरो आमनो कीं रै आगै झाड़ै। घरां

ठिकाणो :
माताजी रै मिंदर कनै
पुराणी गिन्नाणी
बीकानेर (राज.)

बैठी अमूज जावै। कनै भोमिया जी रो थान हो, बठै जाय बैठै। बांनै आपबीती सुणावै। काची रोटियां, मैला गाभा, बात-बात मांय ताना, मांदगी में ना तो दवा-दारू अर ना ई हीड़ो करै। चढ मोट्यार रै सागै फटफटियै माथै अर स्हैर में खेल-तमासा देखण नै जावै परी। म्हारी कीं सुणाई नीं करै।

पण जिकै रो कोई नीं हुवै, बीं रो सांवरियो हुवै। बठै ई थान माथै गेड़ै सूं ऊंचा रा हाकम धोक लगावण नै थान माथै आया। आगै डोकरी नैं बैठी देखी तो पूछ्यो, ''मां सा कियां.... ? अमणा-दूमण कियां ?''

हाकमां री बात सुण'र चौमासै में आकास सूं बादळ फाटै ज्यूं डोकरी रै नैणां सूं नीर री धारा फूट पड़ी। आपबीती सुणाई। जणै राज रा हाकम बीं नैं कानून बतायो अर कैयो कै बहू थांरी वजै सूं गैका करै है मा'सा! अबै थे अेक कूड़ो परचो बतावण खातर कागज बणावो अर घर मांय जठै बेटै-बहू री निजर पड़ै, उण ठौड़ धर देईजो। केईजो कै म्हैं कोई जरूरी काम जावूं हूं।

डोकरी हाकम कैयो जियां ई सांग रचियो। बो कागज लेय'र उणरै माथै अंगूठो टेक'र घर रै मिंदर में राख दियो। बेटो-बहू सेवा करण नै मिंदर में बड़्या जणै देख्यो तो कागज बांच'र बेटै रो बाको फाटग्यो। ऊपर री जाड़ ऊपर अर नीचै री नीचै रैयगी। बो सोच्यो, तो कांई माऊ म्हारै सागै दगो कर रैयी है ? बो आपरी घरआळी नैं बतायो कै माऊ तो म्हनैं नौकरी सूं कढावणो चावै। जे आ बात हुयगी तो आपां भूखां मरांला।

अबै बेटो-बहू दोनूं अेकदम कंवळा हुयग्या। दोनूं जाय'र जोड़ै सूं मां रै पगां पड़्या, ''मा'सा, म्हांनै माफ कर दो।''

मां आपरै टाबरां नैं सूकै में सुवाणै अर खुद गीलै में सोवै। टाबर रोवै तो सारी रात मां जागै। आपरै मूंडै मांयलो कवो बेटै नैं देवै, पण बो कित्तो नुगरो हुय जावै। औलाद कित्ती स्वारथी हुय जावै। कळजुग है, कळजुग! पण मां तो गंगा दांई ऊजळी है अर ऊजळी ई रैसी। कळजुग री टाप बीं नैं कदैई कोनी लागै। आपरी सोच-समझ रो फरक है। आपां री संस्कृति अर संस्कार दुनिया मांय पढीजै। अब अेक कांनी आपां हां! आपां आथूणी हवा में बैय रैया हां। संभळो! हेनसांग फहियान इतिहास में कित्ती बडाई करी है आपां री। बीं धरोहर नैं संभाळ'र तो राखो। आपां नीं तो कुण अटाऊ-बटाऊ राखसी ?

⌘⌘

हुवै न सत् री परंपरा, सत अंतस रो बोध।
पीढी चालै असत री, तत नै समझ अबोध।।

-कवि कन्हैयालाल सेठिया

सुरेश व्यास अेडवोकेट री आ कहाणी 1962 में लिख्योड़ी है। इण कहाणी उण बगत री सरकारी मशीनरी अर राजनीति री दसा दीठगत हुवै। इण कहाणी नैं उण बगत रै संदर्भ में देखणी चाईजै।— सं.

सुरेश व्यास अेडवोकेट

उल्थो : श्याम महर्षि

इंजेक्शन

सिंझ्या हुयगी। म्हैं घरां जाणै रो सुवांज कर रैयो हूं। परसूं सूं आखै जिलै रै गांवां में फिरणो सरू करणो है। डाक्टर आपरी ड्यूटी पूरी कर'र ब्हीर हुयग्या है। चपरासी दरूजा अर खिड़क बंद कर रैया है।

इत्तै में अेक जीप अस्पताळ में आय'र रुकी। दो मोट्यार जवान जीप सूं उतर'र अस्पताळ में बड़्या। कंपाउंडर आपरी ड्यूटी बजा'र ब्हीर हुयग्या। इनडोर ड्यूटी आळा कंपाउंडर अर चपरासी आपरै कारज में लाग्योड़ा हा।

दोनूं मोट्यार खद्दरधारी है। अेक सिर माथै धोळी गांधी टोपी पैर राखी है। दूजो सिर उघाड़्यां है। खिड़क-दरूजा बंद करणियै चपरासी सूं बै केई ताळ बंतळ करै, फेर म्हारै कानी आवै। रामा-स्यामा हुवै।

उघाड़ै माथै आळो मिनख म्हासूं बतळावै, ''इण जिलै रै गांवां में वेक्सीनेशन (टीका) रो कारज थे करो हो नीं?''

''जी फरमावो?''

''पूछूं हूं, देवासर गयां नै थांनै कित्तोक टेम हुयग्यो?''

''अै ई कोई दो महीना।''

''अबार तो बठीनै ड्यूटी नीं है स्यात?'' गांधी टोपी आळो मिनख पूछै हो।

''नीं।''

''डाक्टर साब कठै?''

''कोठी मांय।''

ठिकाणो :
महर्षि प्रिंटर्स
मोमासर बास, श्रीडूंगरगढ
मो. 9414416274

''आपनैं अबार ई देवासर चालणो है।''

''क्यूं?''

''बठै माता (चेचक) फैल री है।''

''पण थे... थांनै...?''

''जनता री सेवा करणो म्हारो करतब है।'' उथळो मिल्यो।

म्हैं मन में हंस्यो। चुणाव रा दिन है। देवासर रो बच्चो-बच्चो कांग्रेस सूं बेराजी है। जागीरी खतब हुयगी है, पण राज खतम होवता थकां भी राजा साब रा सोच-सिरदा खतम नीं हुयी है। कांग्रेस री हालत घणी माड़ी है।

म्हैं बोल्यो, ''अबार कियां जा सकूं हूं? आज हैड क्वार्टर माथै ड्यूटी पर हूं। परस्यूं सूं म्हनै गांवां में राउंड लगाणै रो आदेस मिल्योड़ो है। छुट्टी आळै दिन म्हैं ड्यूटी माथै क्यूं रैवूं?''

दोनूं मिनख कीं झेंप्या। कारण म्हनै निगै है—परस्यूं तो चुणाव ई है।

''देखो, किणी तरै...'' कीं नरमाई रै सुर सूं अेक जणो बोल्यो।

म्हैं जाणूं हूं—म्हनै जावणो पड़सी। आं लोगां कनै साम-दाम-दंड-भेद सौ-क्यूं है। म्हैं नटग्यो तो नौकरी संकट में।

''चालो, थे जद इत्तो ई कैय रैया हो तो चालसूं।'' म्हैं अैसान करतो-सो बोल्यो।

सज-धज'र म्हैं जीप में बैठग्यो। उघाड़ै माथै आळो डाक्टर रै क्वार्टर कानी जावै हो।

म्हैं चालण खातर त्यार तो हुयग्यो, पण म्हनै म्हारी कमजोरी रो ठाह है। म्हारै कनै दवाई रो स्टॉक बेकार है। हफ्तै रै बाद भी इण दवाई सूं कोई फायदो नीं हुवै। म्हारै कनै दवाई अस्पताळ रै स्टॉक सूं आपां नैं बीस दिन सूं ऊपर हुयग्या है। पण ड्यूटी तो पूरी देवणी ई पड़सी। ऊपर सूं जद इत्तो सारो स्टॉक भेज दियो जावै तो दवायां टाइमबार्ड हुय जावै, बगत माथै उणनैं ई काम में लेणी पड़ै।

डाक्टर सूं मिल'र बै भला मिनख बावड़ग्या। म्हारै तीनूवां रै बैठ्यां पछै जीप स्टार्ट हुवण रै सागै म्हैं मुळक'र धोळी टोपी आळै मिनख सूं कैवूं, ''देखो, चुणाव जीत्यां पछै म्हांनै बिसर तो नीं जावोला?''

''हेंऽहेंऽऽ'' इयां कदैई हुय सकै कांई?''

म्हैं जाणूं हूं, इयां हुय नीं सकै—हुवै है।

म्हैं भगवान नैं धिनवाद देवूं कै जीप माथै ड्यूटी पूरी कर रैयो हूं, नीं जणै ऊंट माथै इत्तो लंबो सफर कर्‌यां अधमर्‌यो हुय जावतो।

गांव आयग्यो। रात नै कोई खास कारज नीं हुय सक्यो। दिनूगै, म्हैं वैक्सीनेशन रो कारज सरू कर देवूं है। पंदरै-बीस मरीज मलेरिया रा भी है।

उघाड़ै माथै हाळै खद्दरपोस सूं म्हैं पूछूं, ''डाक्टर आसी कांई?''

''आवण आळा है घटै आध घटै में।'' बै उथळो देवै।

म्हारो काम चालू है। इण बिचाळै दो जीपां गांव में आयगी है। पैलड़ी जीप में दो बैलां री जोड़ी नैं वोट देवण री अपील करण आळो कार्यकर्ता हो। दूसरी में राजा साब रा तीर-कबाण चालै हा। अब तांई गांव रा लोग गांधी बाबै रै इण भगतां री भलमनसाहत सूं खासा प्रभावित हुयग्या हा। कैयां सूं सुण्यो है म्हैं—मौत रै मूंडै सूं बचावणिया अै लोग, म्हनै पासो पलटतो लखायो।

जद तांई डाक्टर आयग्यो। म्हैं उण सूं अेकांत में मिलूं हूं।

डाक्टर सिगरेट रै धूंवै बिचाळै पूछै, ''बोलो, काम किसोक चाल रैयो है, कित्तीक ताळ रो है।''

''काम अजै सरू ई कठै हुयो है?'' म्हैं लारलै सवाल रै जबाब में सवाल करूं हूं।''

''कांई मतलब?''

''जी, मतलब औ है कै दवायां रो स्टॉक बीस दिन पुराणो है।''

''तो इण सूं कांई हुयो?''

''आप तो जाणो हो साब!''

डाक्टर म्हारै कानी करड़ी मीट सूं देख्यो।

''साब, इण पुराणी दवाई नैं काम में लेणै सूं कांई फायदो हुसी?''

''म्हनै ठाह है। ऊपर सूं आदेस है, जिसी दवायां भेजी जावै, उणां सूं काम चलावो।''

डाक्टर भी आपरै साथे दवायां ल्याया है। म्हैं डाक्टर सूं दवायां लेंवती बगत पूछूं, ''अै तो ताजा हुवैली?''

डाक्टर मुळक'र कैवै, ''हां, अै ई कोई सवा महीनै पैल्यां रो स्टॉक है। किणनैं भी कीं नीं कैवणो है।''

म्हैं भी किणनैं ई कीं नीं कैवूंला। औ तो रोजीना रो धंधो है। फेर कह भी द्यूं तो सुणैला कुण म्हारी...!

मलेरिया रै रोग्यां खातर भी डाक्टर टिकड़्यां देवै। म्हैं हर रोगी नैं दो दिनां री देय देवूं हूं। टिकड़्यां ओज्यूं ई बचेड़ी पड़ी है। म्हैं पूछूं, ''साब, अै भी बांट दूं?''

''नीं-नीं, ऊपर सूं आदेस है। अेक मिनख नैं छव टिकड़्यां सूं बेसी मत द्यो। फेर आपणै कनै स्टॉक भी थोड़ो है।''

''पण साब, सात-आठ दिनां री खुराक बिना फायदो कियां हुयसी?'' म्हैं हिम्मत कर'र बोल्यो।

''म्हनै ठाह है...।'' बै चिड़'र बोल्या, ''थे थांरो काम करो, जावो।''

उघाड़ै माथै आळो मोट्यार आय'र पूछै, ''कांई बात है डाक्टर साब?''

''बता द्यूं थांनै!''

बै लोग उछाव सूं डाक्टर कानी देखै। डाक्टर मुळक'र कैवै, ''जकी दवायां म्हैं काम में लेय रैया हां, बै सवा महीनै पुराणै स्टॉक री है। मतलब औ कै साव बेकार। इण रो हफ्तै पछै कोई असर नीं होवै।''

''डाक्टर साब...'' बै लोग होळै-सीक कैवै, ''इण रोढा में नीं पड़णो चाईजै। थे वैकसीनेशन लगाता जावो।''

''पण ईं रो कीं फायदो नीं हुवैलो।''

''मत हो भलांई, डाक्टर!'' बै थम'र बोल्या, ''हुवै कियां कोनी, हुयसी। समझो, हुयसी फायदो।'' अर कैवतां-कैवतां उणरी आंख्यां मांय चमक आ जावै।

''अछ्या।'' डाक्टर उणनैं थ्यावर दिरावै।

''म्हनै ठाह है—डाक्टर।''

म्हैं दवाई बांट दी। वैक्सीनेशन घणकरा लोग लगवा चुक्या। टाबर अर घूंघटा आळी लुगायां रै वैक्सीनेशन लगावणो बाकी है। गांव रो चौधरी म्हारै साथै है। म्हैं घर-घर जाय रैयो हूं। चौधरी राजा साब रो भगत है। पैलां केई बार मिलेड़ो है। इण खातर उणनैं जाणूं हूं। म्हैं उणनैं पूछूं, ''चुणाव में कांई रंग-ढंग लागै है। पलड़ो किणरो भारी लागै है?''

बो बोल्यो, ''कांग्रेस जीतसी। ठीक भी है...''

सुण'र म्हनै अचंभो हुयो। बो फेरूं बोल्यो, ''भला मिनख, ध्यान भी कित्तो राखै, जनता री भलाई रो। राजाजी तो गढ री सोभा बढा रैया है, इन्नै औ लोग कित्ता फिर रैया है... किण खातर? म्हारै खातर ई तो!''

औ तुरंत दान महा कल्याण रो फळ है! म्हैं सोच्यो।

गांव रै किनारै हरिजन बस्ती है। चौधरी री सागै जाणै री मनसा नीं लागै। आळो-टाळो कर इन्नै-बिन्नै हुय जावै। हरिजनां रै आं पंदरै-सोळा घरां में माता माता रो प्रकोप सगळै गांव सूं ज्यादा है।

इत्तै में अबकाळै जीप री बजाय कांग्रेस री लारी आवै। माइक गूंजै। महात्मा गांधी री जै! नेहरू जी री जै!! भारत माता री जै! महात्मा गांधी री जै!! भायां! दो बैलां री जोड़ी नैं याद राख्या। औ दो बैल जका आपां री जिंदगाणी रो आधार है। तीर-कबाण रो जमानो लदग्यो। तीर-कबाण धान नीं घालै। धान घालसी दो बैलां री जोड़ी। किसान भायां! आपां रै बैलां री लांबी उमर अर आछी फसल री आस खातर, शिवजी री सवारी नैं वोट न्हाख'र धरम कमावो, धान कमावो अर मुलक री तरक्की सारू मदद करो। धनख-बाण भगवान रामचन्द्र जी रा है, आ कैय'र लोग आप सूं वोट मांगै है। पण भायां, आ मत भूल्या कै बैल शिवजी रा है। भायां अर बैनां! रामायण में लिख्योड़ो है अर आप लोग सैकड़ी बार सुण्यो भी है—भगवान रामचंद्रजी, शिवजी री पूजा करणिया सूं अर खुद री पूजा करण आळा सूं घणा राजी हुवै है।

बैलां री जोड़ी नैं वोट देय'र शिवजी अर रामचंद्रजी, दोन्यां नैं राजी राखो... कांग्रेस नैं वोट द्यो।''

सोचूं हूं—प्रापेगेण्डा इणनैं कैवै, कठै री ईंट, कठै री रोड़ी, भानुमती री गिरस्थी जोड़ी। कार्यकर्ता फिर-फिर'र जोरां सूं प्रचार कर रैया है।

थोड़ी ताळ पछै राजाजी री लोरी भी आ जावै। कार्यकर्ता माइक माथै राजाजी, उणां रै बाप-दादां अर पड़दादां री सूरवीरता, दानसीलता अर प्रजा री सेवा रो बखाण करै। किसानां नैं याद दिरावै अर कांग्रेस री भूंडाई बीं ढंग सूं करणी सरू करै जिण ढंग सूं कांग्रेस रा कार्यकर्ता राजाजी री करै हा।

पांच-छव घरां नैं छोड'र सगळी जगां वैक्सीनेशन लगा दियो हो। टाबर टसकै। बडेरां रा ओजर। किणी रै फाटेड़ा गाभा है तो केई साव नागा-उघाड़ा। वैग्यानिक जुग में सभ्यता अर संस्कृति री जबर मजाक देख'र उबाक आवै, पण मन काठौ कर'र रैय जावूं। कीं मन में दया उपड़ै। सोचूं—घ्रिणा आस्यूं करी जावै या उणां स्यूं जका खुदो-खुद नैं मुलक री तरक्की रा दावेदार मानै।

आगलै घरां पूगूं। म्हारै सूं पैल्यां अेक मोट्यार बठै खड़्यो है। गांधी टोपी, लांबो चोळो अर ढीलो पजामो। ऊपर सूं नीचै तांई धोळोधप्प। सांपड़तै दीसै—कांग्रेस रो कार्यकर्ता, यानी प्रचारक है। म्हैं म्हारो कारज सरू करूं। बठीनै बो मिनख चुणाव सारू घरधणी नैं समझाय रैयो है। म्हैं उणरी बातां सुण रैयो हूं। घरधणी रो नांव मिट्ठन है। सात टाबरां रो बाप है। अचाणचक म्हैं चौंक्यो। मिट्ठन पूछै हो, ''इण सूं कांई होयसी? कांग्रेस म्हारै खातर कांई करैली? ओज्यूं तांई तो कीं नीं हुयो उण सूं।''

''जनता री भलाई खातर बांध बण रैया है—जगां-जगां...'' कार्यकर्ता समझाणै री खेचळ करै। कार्यकर्ता हार मानण नै त्यार नीं। बो उंतावळो-सो दीसै अबै! कैवै—सौ-क्यूं हुय जासी, सब धीरै-धीरै...'' कैय'र बो ब्हीर हुय जावै। म्हैं मिट्ठन नैं कैवूं, ''तूं तो कम्यूनिज्म री बातां करण नै लागग्यो रे मिट्ठन!''

मिट्ठन समझ नीं सक्यो। कैवै, ''आपरी अंगरेजी म्हैं नीं समझ सकूं डाक्टर साब! म्हैं तो काळजै सूं काढ'र छोटी-सी बात कैयी है। नीं जाणां, अै लोग किसाक है? किसी-किसी बातां बणावै?''

''म्हनै देर होय रैयी है...।'' बगतो-सो कैवूं, ''अै वैक्सीनेशन अर इंजेक्शन लगावता जाय रैया है। दवायां पुराणी है। पण इंजेक्शन लगाणो ई है, और कोई उपाय भी तो नीं है। अै और कीं करणो भी नीं चावै। इंजेक्शन लगता जासी, दवायां भलांई पुराणी हो—कित्ती ई पुराणी।''

मिट्ठन म्हारै कानी डफळीज्योड़ो-सो देख रैयो है। बो नीं समझ रैयो है स्यात म्हारी बात! स्यात समझ भी रैयो हुवै!

×× ××

कारज पूरो हुयगे है। म्हैं डाक्टर रै साथै जीप में बैठग्यो। बै दोनूं मिनख म्हारै साथै है। गांव रै मिंदर सारै कांग्रेस री लारी ऊभी है। माइक माथै कांग्रेस रो प्रचार हुय रैयो है। नेन्हा-मोटा, काळा-कोजा नागड़ा अर बेहुदा टींगर लारी रै च्यारूंमेर घुर-घुर'र देख रैया है।

ड्राईवर जीप स्टार्ट करै। डाक्टर सिगरेट सिळगाय लेवै। उघाड़ै माथै आळो मोट्यार आपरै खद्दर रै चोळै री जेब सूं सोनै री डबड़ी काढ'र पान रो बीड़ो मूंडै में ठूंसै। म्हैं जेब सूं सिगरेट री पॉकेट निकाळूं हूं। अेक चारमीनार बची है। पीऊंला नीं। बचा'र राखणी पड़सी। म्हनै हालै दिन लालै रो हिसाब करणो पड़सी। चारमीनार रात नै जीम्यां पछै पीऊंला।

स्हैर आयग्यो। अस्पताळ रै साम्हीं म्हे उतर्‌या।

''आपरो म्हे किण सबदां सूं आभार प्रगट करां डाक्टर साब!'' उघाड़ै माथै आळो मोट्यार कैवै। उणरी निजर म्हारै कानी भी है, जाणै बो म्हनै भी बतळाय रैयो हुवै।

गांधी टोपी आळो मोट्यार बोल्यो, ''डाक्टर साब! बां दवायां आळी बात प्रगट नीं हुवणी चाईजै। विरोधियां नैं मौको मिल जावैलो नीं तो।''

''आप बेफिक्र रैवो।'' उणरी दुआ-सलाम रो उथळो देंवता थकां डाक्टर साब आपरै क्वार्टर कानी मुड़ जावै। म्हैं भी म्हारै क्वार्टर कानी मूंडो करूं। दोन्यूं मोट्यार राजी मन सूं जीप माथै चढ'र ब्हीर हुय जावै। उणरी जीत अबै पक्की है। माता रै वैक्सीनेशन रै साथै इंजेक्शन भी लागग्या है, इण खातर।

म्हनै निगै है—परस्यूं चुणाव है। चुणाव खतम हुय जासी। गांव रो कोई भी रोगी नीरोग नीं हुवैलो। फूट्या भाग उणां रा! दवायां तो मिल ई गयी।

म्हारो कारज तो वैक्सीनेशन देवणो है। दवायां पुराणी हुवै चायै नूंवी। मतलब राखणो भी नीं चावूं। राखण नै लागग्यो तो अफसरां अर जनप्रतिनिधियां री आंख री किरकिरी हुय जाऊंला। इयां म्हैं कियां चाह सकूं हूं। म्हारै भी टाबर है, लुगाई है। म्हनै अर बां सगळां नैं भूख लागै। आज रै जमानै में, इण खातर दिखता थकां ई आंधो बणनो आछो है।

⌘⌘

अर्जुनदान चारण

भरपाई

रामकिशन नैं कॉलेज री पढाई पूरी करयां नैं दो बरस होयग्या हा। आं दो बरसां में केई कंपीटिशन दिया। पास ई हुयो। इंटरव्यू दियो पण सिफारिश नीं होवण सूं नौकरी नीं मिली। अेक दिन अखबार पढतां रोडवेज में कंडक्टरां री वैकेंसी माथै निजर पड़ी। रामकिशन रै दूर रै रिस्तै में जीजोसा रोडवेज में अे.टी.आई. हा। रामकिशन जाय'र आपरै जीजोसा सूं मिल्यो। जीजोसा उणनैं भरोसो दिरायो कै म्हैं बडा साब सूं बात कर'र बतासूं।

साब सूं बात हुयां पछै रामकिशन नैं खबर करी अर सगळी बात तै व्हैगी। तै बात मुजब रामकिशन रुपिया दे दिया अर उणनैं कंडक्टर री नौकरी माथै ले लियो।

रामकिशन थोड़ा दिन अनूपगढ रूट में अेक जूनै कंडक्टर रै साथै रैयो अर सगळो हिसाब-किताब समझग्यो। तीन महीनां पछै रामकिशन नैं सूरतगढ रूट मेंआपै-थापै लगाय दियो। रामकिशन अेक दिन नंबर लेय'र सूरतगढ जावै हो कै महाजन सूं निकळतां ई फ्लाईंग आयगी। दो अे.टी.आई. गाडी में चढ्या अर टिकटां चेक कर'र नीचै उतरग्या। जायनै बडा साब नैं बतायो कै आठ सवारी बिना टिकट है सा।

बडा साब रामकिशन नैं बुलायो अर पूछ्यो, ''कांई विचार है, औ कांई हो रैयो है ?'' रामकिशन साब रै थोड़ो नैड़ो जायनै होळैसीक बोल्यो, ''साब, आपनैं दिया उणरी भरपाई करूं हूं।'' इत्तो सुणतां ई साब दोनूं अे.टी.आई. सूं जीप में चढण रो कैयो अर आगै निकळग्या।

⌘⌘

ठिकाणो :
गांव-पोस्ट : करमावास
जिला-बाड़मेर (राज.)
मो. 9414482882

उडीक

समदड़ी जंक्शन जोधपुर डिवीजन रो खासो बडो टेसण। दिन में पांच-छह गाडियां आवै-जावै। टेसण रै लागतो ई मसाण। सियाळै री रुत, पोष रो महीनो, बेजां ठंड पड़ै। जाणै हेमाळो हालग्यो। अेक बूढो मंगतो प्लेटफारम माथै अंगरेजी रो आठो हुयोड़ो अेक कांबळकी ओढ्योड़ो पड़्यो। उण सूं थोड़ो आंतरै ई अेक मोट्यार मंगतो ई बैठो हो। दिनूगै नौ बज्यां पालनपुर सूं गाडी आय'र टेसण माथै रुकी। अेक सेठ आपरै कुनबै साथै उतर्‌यो।

बूढै मंगतै नै सी सूं धूजतां देख'र उणनैं दया आई अर आपरी नूंवी कांबळ बूढै नैं ओढाय दी। बूढियै रै थोड़ी गरमास आयगी। कांबळ देवतां उण मोट्यार मंगतै भी देखी ही। जद प्लेटफारम माथै कीं भीड़भाड़ कम हुयी तो वो मोट्यार मंगतो बूढियै री कांबळ खैंच'र भाज्यो। डोकरो भी उणरै लारै हाका करतो भाग्यो। पण मोट्यार किणरो हाथ आवै! लोगां डोकरै नैं थ्यावस दीन्ही कै थानै भगवान और देसी। पण डोकरो कीं नीं बोल्यो अर मसाण कानी व्हीर व्हैगो। लोगां उणनैं पूछ्यो, ''बाबा, मसाण कानी कीकर जावो हो?''

डोकरै पडूत्तर दियो, ''उण मोट्यार चोर नैं म्हैं मसाण में उडीक लेसू। उठै तो उणनैं आवणो ईज पड़ैला।''

सगळा लोग डोकरै कानी देखै हा।

⌘⌘

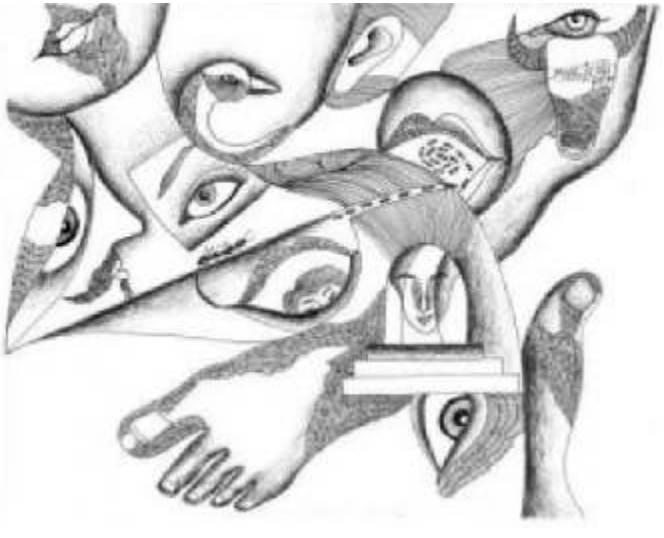

मानसिंह राठौड़ 'भुरटिया'

बीरोसा

पंडित जी चंवरी रै मांच मंतरां नैं जोर-जोर सूं पढ रैया हा। लिछमी चंवरी मांय आपरै होवण वाळै पति रै सागै सात जलम रै बंधण सूं बंधीजती थकी चौथो फेरो खावण लागी। लिछमी री आंख्यां सूं झर-झर गंगा जमना री धार ज्यूं आंसूड़ा टपकण लाग्या।

लोग-लुगाई तरै-तरै री बातां करै हा कै लिछमी रै आज भाई होवतो तो वो भी चूंदड़ी ओढा'र गळै लगावतो, पण इण अभागण रै तो कोई भाई भी नीं है। इत्तो सुण'र लिछमी रै हिम्मत रो बांध टूट पड़्यो अर वा जोर-जोर सूं कुरळावण लागी। औ देख'र रिस्तेदारां अर पाड़ोसियां, सगळां री आंख्यां नम व्हैगी। विदाई री वेळा आवतां-आवतां लिछमी आपरै मां-बाप नैं बिछड़तां देख'र रोय-रोय'र आपरा होस खोवण लागी।

उणीज टैम अेक मोट्यार आय'र लिछमी रै माथै पर हाथ फेरतां थकां चूंदड़ी ओढाई अर कैवण लाग्यो, ''बाईसा, म्हैं पांचवीं कक्षा में आपरै सागै पढण वाळो लाभूड़ो हूं। रक्षाबंधन रै दिन आप म्हारै राखड़ी बांधी ही। आज जद खबर मिली तो आपरी राखड़ी रै काचै डोरै सूं बंध्योड़ो आपरो धरम भाई आयो है, पण मोड़ो आयो इण वास्तै माफ करज्यो बैन! लिछमी बीरोसा! बीरोसा!! कैवती थकी गळै सूं लिपटगी।

भाई-बैन रो औ मिलण देखर सजळ आंख्यां सूं सगळा लाग्या, ''वा बीरोसा! भला पधारया।''

⌘⌘

ठिकाणो :
सिद्धार्थ विद्या मंदिर
उ.मा.वि., कृषि मंडी रोड
शास्त्री नगर, बाड़मेर
344001
मो. 9166220021

राजेश अरोड़ा

सफळता

बाप, बेटै नैं स्कूल छोडण जाय रैया हा। चालतां-चालतां बाप, बेटै सूं पूछ्यो, ''बेटा, काल स्कूल मांय कांई सबक सिखायो हो?''

''बापू, काल गुरुजी बतायो हो कै मिनख नैं सदीव दूजां रा सद्‌गुण ई देखणा चाईजै, दुरगुण नीं। गुलाब नैं ई देखो, नीं कै बीं रा कांटा।''

''बेटा, थूं इण सबक सूं कांई समझ्यो?''

''बापू! सबक री फिलॉसफी तो म्हनैं नीं समझायी।''

''ठीक है बेटा, म्हैं समझावूं।'' कैवता थकां बाप बोल्यो, ''बेटा, जिको दूजां रै सद्‌गुणां नैं ई देखनै बांनै ग्रहण करै, बो आपूंआप नैं सुधार लेवै। इणरै उलट जिको दूजां रै दुरगुणां नैं ई देखै, तो बो आपूं-आपनैं सुधारणै री बजाय, दूजां रै अवगुणां नैं मन मांय भेळा करता थकां खुद नैं बरबाद कर लेवै।''

सबक री फिलॉसफी समझ'र बेटो बोल्यो, ''बापू, थे नचींता रैवो। म्हैं इण सबक नैं आपरै आचरण मांय ढाळनै जीवण नैं अेक नूंवो आयाम देवूंलो।''

बाप हरखीजतो थको कैयो, ''स्याबास बेटा, आपणै अठै सुणणै रो घणो रिवाज है, सुणनै अमल करणै रो नीं। सुणनै जिको अमल करै, बो ई आपरै काम मांय सफळ हुवै।''

बंतळ करतां स्कूल नैड़ै आयग्यो हो। बेटो, बाप रै पगां लगा'र मुळकतो स्कूल बावड़ग्यो।

⌘⌘

ठिकाणो :
भारतीय डाक विभाग
गजसिंहपुर 335024
जिला-श्रीगंगानगर(राज.)
मो. 8619060355

महानता

आज नैतिक शिक्षा रै पीरियड मांय अध्यापक रो टाबरां नैं पढावणै रो मूड नीं हो। मस्ती रो मूड हो। बै क्लास कानी तकावणै लाग्या। फेरूं अेक छोरै कानी इसारो करता थकां बोल्या, ''राघव, चाल बेटा! थूं बताव कै बडो होय'र थूं कांई बणसी?''

राघव ऊभो होय'र बोल्यो, ''गुरुजी! म्हैं बडो होय'र गांधीजी री दांई महान बणसूं।'' आ सुण'र कनै बैठ्यो राघव रो अेक साथी उणरो मजाक उडांवतो थको बोल्यो, ''औ मूंडो अर मसूर री दाळ! देखो साथीड़ां! औ महान बणैलो। महान बणण वाळै रो मूंडो तो देखलो।''

सुणतां ई पूरी क्लास ताळी देय'र हांसण लागगी।

गुरुजी कीं रीस मांय बोल्यो, ''देखो टाबरां, फिजूल किणी री मजाक उडावणी आछी बात कोनी।'' फेरूं बै राघव सूं बोल्या, ''हां, बेटा! ठीक है। थूं महान बणैलो। पण कियां? औ बताव।''

राघव बोल्यो, ''गुरुजी, कीं बणणै सूं पैली परीक्षा तो हुवै ई है। प्राय: सगळा ई महापुरुस ईसर री घणी ई क्लेसदायणी अर कठण सूं ई कठण परीक्षावां मांय सूं गुजर्‌या है। उणी भांत म्हैं ई संकटकाळ मांय सिरधा, सैणसगती अर धीरज नैं नीं छोडसूं। म्हैं औ कदैई नीं भूलूंला कै फूठरा गुलाब रा फूल कांटा मांय ईज खिलै।''

सुण'र क्लास मांय स्यांती बापरगी। सगळा भणेसरी आकळ-बाकळ रैयग्या।

गुरुजी घणा ई खुस हा।

⌘⌘

मन री सुंदरता

नरस नवजात शिशु नैं बीं री मां नैं सूंपती थकी उपेक्षित भाव सूं बोली, ''लै संभाळ! थारै काळै-कळूटै कागलै नैं... टाबर जण्यो है कै... हूंऽऽ!''

मां शिशु नैं लियो। निहार्‌यो। फेरूं छाती सूं चिपकांवती थकी बोली, ''म्हारो चांद!''

⌘⌘

हंसराज साध (रांकावत)

माया रो लटको

अेक समै री बात। भगवान क्रिसण अर अर्जुन दोनूं सागै-सागै बैंवता हा। अेकाअेक अर्जुन रै मन में विचार आयो कै आपां आज तांई भगवान री माया तो कदैई देखी ई कोनी। आ सोच'र बो श्री क्रिसण जी साम्हीं झांक्यो अर दोनूं हाथ जोड़'र अरज करी कै हे दीनानाथ! म्हारै मन में अेक विचार उपज्यो है कै महाभारत रै जुद्ध मांय आपरै बळ-पराक्रम अर किरपा रै पाण ई म्हैं अपरबळी जोद्धावां माथै जीत हासल करी। आप आपरो विराट रूप ई म्हनैं दिखाय दियो, पण अेक बात री कमी म्हनैं हमेस सतावती रैवै कै आप म्हनैं कदैई आपरी माया कोनी दिखाई। आप तो मायापति हो, अेक बार म्हनैं ई आपरी माया तो दिखावो!

भगवान अर्जुन री अरज सुणनै मधरा-मधरा मुळक्या अर झट बोल्या—हे अर्जुन! तूं माया देख'र कांई करसी? कोई और चीज मांग लेंवतो तो बात म्हारै ई समझ में आवती। पण अर्जुन कैयो कै भगवान आप भलांई कीं कैवो, पण म्हारी इच्छा तो माया रा दरसण करण री है। भगवान बोल्या—अर्जुन, खैर तूं म्हारो व्हालो मित्र अर भक्त है, म्हैं थारी बात नैं नीं टाळ सकूं, पण अबार नीं, बगत आयां थारी इच्छा ई जरूर पूरी करसूं।

ठिकाणो :
'रांका भवन'
माताजी रै मिंदर कनै
पुराणी गिन्नाणी
बीकानेर (राज.)
फोन : 0151-2542778

इण भांत अर्जुन अर भगवान क्रिसण दोनूं रथ माथै बागयत में सैल-सपाटा कर'र पाछा महलां में आयग्या। समै रो पहियो घूमतो रहियो।

अेक दिन भगवान सोच्यो कै अर्जुन री घणै दिनां सूं माया देखण री इच्छा है तो आज इणरी बा इच्छा पूरी कर ई देवां। उण दिन माता

कुंती रसोड़ै मांय रोट्यां पोवै ही अर अर्जुन बारै सूं आय'र बोल्यो—मां, थे इत्ती मोड़ी रोटी पोवो हो, म्हां दोनूं नैं अणूती भूख लागी है। कित्तीक देर लागसी ? कुंती बोली—बेटा अर्जुन, थे दोनूं जणा नदी-सिनान कर आवो, जित्तै म्हैं रोटी-बाटी करयोड़ी त्यार राखसूं। अर्जुन रै बात जचगी कै चालो, तपती में सिनान करण सूं जीव सौरो हुय जासी।

अर्जुन बोल्यो—भगवान, रोटी बणै जित्तै आपां नदी में सिनान कर आवां। बै दोनूं नदी कानी गया अर नदी कांठै गाभा राख नदी में जाय घुस्या। भगवान झट माया नैं सिमरी अर आपरी माया फैलायी। अर्जुन जियां ई नदी में डुबकी लगाई अर जद पाछो आपरो माथो बारै काढ्यो तो उणरै अचरज रो ठिकाणो नीं रैयो। बो सागी रूप में कोनी हो, अेक फूटरी-फर्री लुगाई रै रूप में हो। उणरै गाभां री ठौड़ ई जनाना गाभा पड़्या हा। बो हाकबाक हुयोड़ो इन्नै-बिन्नै झांक्यो पण बीं नैं कीं समझ नीं आयो। बो लजखाणो होय'र बारै आयो अर हा जिसा ई गाभा पैर'र हिरणी दांई डोबा फाड़ण लाग्यो। थोड़ी देर में उणनैं अेक चांडाळ दीस्यो, काळो ततूड़ अर सागै अेक काळो ई गिंडक। चांडाळ रै हाथ में अेक लांबो-सो बांस। चांडाळ जद नदी रै कांठै ऊभी फूटरी लुगाई नैं देखी तो उणरो मन ललचायो अर उणरो हाथ पकड़'र खींचण लाग्यो। अर्जुन घणो ई डाड्यो पण सूनवाड़ में कुण सुणै ? लाचार होय'र उणनैं चांडाळ रै लारै लुगाई रूप में ब्हीर हुवणो पड़्यो। चांडाळ मन में घणो राजी हुयो। चांडाळ उण रोवती-बिलखती लुगाई नैं आपरै घर में लाय पटकी अर आंख काढ'र घोरका करतो बोल्यो—आज पछै इण घर री बाखळ सूं बारै पग मेल दियो तो टंटा तोड़ देऊंला। आज सूं म्हैं थारो धणी हूं अर तूं म्हारी लुगाई। कान खोल'र आ बात सुणलै अर आछी तरै चेतै राखजै। अबै बेचारो अर्जुन करै तो कांई करै ? मन में सोच्यो कै आ तो जबरी आफत आय पड़ी। पण खैर, समै बडो बळवान। समै आगै मिनख रो कांई जोर !

अेक-अेक दिन करतां पूरा चौबीस बरस बीतग्या अर अर्जुन रूपी चांडाळ री लुगाई पूरै बारह टाबरां री मां बणगी। टाबर-टोळी सूं घर में चैळ-पैळ रैवती, पण बांरै खातर रोटी-टुकड़ै रो छाती-कूटो तो मां नैं ई करणो पड़तो। अर्जुन घर रै चूल्है-चौकै अर खोरसै में ई मगन रैवण लागग्यो।

बगत रै परवाण टाबर ई मोटा होयग्या अर बां सगळां रा ब्यांव ई होयग्या। अबै टाबरां माथै टाबर। घर में पोता-पोतियां री घमक। छोरियां आपरै सासरै गई परी पण दोईता-दोईती तो नानैरै में आवता-जावता ई रैवता। जाया अर पराया, सगळा टाबरां रो छाती-कूटो अर्जुन रै ई पांती आयो। चांडाळ री घरआळी रै रूप में अर्जुन अेक दिन आपरै घर-परिवार रा टाबरां रा गाभां री धोबी-घाट नदी रै कांठै लगाय राखी ही। क्रिसण भगवान सोच्यो कै अबै अर्जुन नैं पाछो आपरी असल जूणी में लावणो चाईजै। नदी रै कांठै ई चांडाळ रो पोतो रमतो हो। बो अेकाअेक नदी कानी भाज्यो अर उणमें समायग्यो। लारै रो लारै अर्जुन ई आव देख्यो न ताव, नदी में जाय घुस्यो। नदी में आपरै पोतै नैं जोवण सारू गोता लगावतो अर्जुन जियां ई पाछो आपरो माथो बारै

काढ्यो तो बो आपरै सागी पुरुस रूप में हो। पण पोता-पोती में उणरो मन अैड़ो रम्योड़ो हो कै बो तो 'अरे म्हारो पोतो! अरे म्हारो पोतो डूबग्यो रे!' कैवतो कूका-रोळो मचाय दियो।

भगवान क्रिसण अर्जुन रै इण विलाप नैं देख'र मुळक्या अर पाछा प्रगट होय'र बोल्या—अरे अर्जुन, कीं रो पोतो? अजै न्हावण सूं मन धाप्यो कोनी कांई? भगवान नैं देखतां ई अर्जुन नैं सगळी बात चेतै आयगी कै अरे, आपां तो भगवान क्रिसण सागै इण नदी में न्हावण नै आया हा। मां कुंती रोट्यां नैं उडीकती हुवैला। अर्जुन घणो लचकाणो पड़्यो अर आपरी धूण नीची करली। उणरै मूंडै सूं अेक सबद नीं निकळ्यो।

भगवान कनै आय'र आपरै सखा अर्जुन रो हाथ पकड़्यो अर उणनैं छंछेड़्यो—अरे अर्जुन, अबै अठै सूं बेगा चालो, मोड़ो होयग्यो है। भूवा आपां नैं रोटी सारू अडीकती हुवैला। अर्जुन बोल्यो—भगवान, अबै रोटी कांई जीमां, अबै कोई रोटी पोयोड़ी थोड़ी हुवैला। उण बात नै तो कित्तो बगत बीतग्यो।

अर्जुन री बात सुण'र भगवान कीं नीं बोल्या। दोनूं खाथा-खाथा म्हैलां में गिया तो देखै कै कुंती भूवा तवै माथै सूं रोटी उथाप रैयी ही। कुंती कैयो—अरे अर्जुन, क्रिसण नदी में न्हाय-धोय'र इत्ता बेगा आयग्या, अजै तो रोटी बणी ई कोनी। अर्जुन मन में सोच्यो कै म्हैं तो पूरा बारह टाबर जिण आयो अर बांरै ई पोता-पोतियां अर दोईता-दोईतियां रा ठाठ होयग्या अर मां सूं अजै रोटी ई कोनी बणाईजी। हे भगवान, थांरी माया नैं सत-सत प्रणाम। हे मायापति, आप नैं कोटि-कोटि निवण। थांरी माया रो कोई पार कोनी।

भगवान क्रिसण अर्जुन साम्हीं देख'र मुळक रैया हा।

⌘⌘

सुरेन्द्र सुन्दरम्

(क)

सोचणो ओखो है
पण,
फैर बी थे
सोचगै देखो!
आपां
आदमी सूं
डांगर कियां बण गया?
⌘⌘

(ख)

बै धरम रै खातर
जान दे दी!
पण आपां
धरम रै खातर
जान ले ली
हिसाब
बराबर कर लियो?
⌘⌘

(ग)

घर
मोटा होयग्या,
अर आदमी छोटा!
प्रकृति रो बिगाड़
कठै तांई पूगग्यो?
⌘⌘

(घ)

म्हारै हक रै खातर
थे किताबां लिखी...
अर बां लोगां
भाषण दिया,
म्हैं किताब पढली
अर भाषण भी सुण लिया
पण बात
बठै री बठैई रैयगी!
अब कोई
दूजो रास्तो है
तो बताओ?
म्हांनै किताबां
अर भाषणा सूं
ना भरमाओ!
⌘⌘

ठिकाणो :
एस.पी.19, पंजाबी सिटी
श्री गंगानगर (राज.)
मो.9414246712

(च)

मीरां
थे अेकर आ
प्रीत री रीत बदळ दयो,
म्हूं किरसण रै
होठां पर थांरै
नाम रो जाप
सुणनो चावूं।
⌘⌘

(छ)

जद छोरी हंसै
तो बींनै लोग देखै!
अर लोगां नैं
छोरी देखै!
छोरी नैं हंसती देख
लोग बातां करै
देखो यारो छोरी हंसै?
⌘⌘

(ज)

म्हैं रोज
चूल्है री आग में
सुपणा बाळां,
आ आग कठै
भड़क ना जावै
टळै इत्तै टाळां!
⌘⌘

(झ)

म्हारा बाप दादा
रोटी रै जुगाड़ में
इयां ई जावता रैया
पण
आभै रा अै देवता
भेख बदळ-बदळ'र
आवता रैया!
⌘⌘

(ञ)

कागलो
ऊंठ री टाकर पर
चूंच मारै!
बेशक
इण री उडीक सूं
कीं नी होवै
पण औ कागलो
क्रांति रा बीज
जरूर बोवै।
⌘⌘

डॉ. साधना जोशी 'प्रधान'

मुधरा बोल

बरसां बरस सूं
खेत रै उतराधै पासै
ऊभै उण ढूंढ री
सूक्योड़ी डाळ माथै
चाणचुकै आय'र बैठगी
अेक कोयलड़ी अबार।

कोयलड़ी रा मिसरी जैड़ा
बोल सुण'र
ढूंढ रै काळजै
उपज्यो हरख अपार।

राजी व्है'र बोल्यो ढूंढ—
'भाण!
म्हैं तो इण उजाड़ मांय
तोड़ै हो आपरा
छेकड़ला दिन,
अपणेस सूं भीज्योड़ा
थारा मुधरा बोल सूं
भलांई पांगरै कोनी
म्हारो तनड़ो
पण हुयग्यो हरियल
म्हारो मनड़ो।
⌘⌘

ठिकाणो :
वंदे मातरम् अपार्टमेंट
कोठारी रोड
पो. सुजानगढ़ 331507
मो. 9413076275

काची काया

आ काया
जाणै जियां
माटी रो घड़लो,
सिरजणहार कुंभार
काया रै माटै नैं
पकावै सांवठो,
पछै घालै
प्राण रो ठंडो पाणी
पण
उमर रै बेजकां सूं
टपको-टपको
झरतो जावै
रात'र दिन
प्राण रो पाणी।

अेक दिन
झरतो-झरतो माटलो
समूचो रीत जावै,
चाणचुकै आय'र लागै
मौत रो भाटो,
टूट'र बिखर जावै
ठीकरी बण माटी
माटी मांय रळ जावै।
⌘⌘

रखपून्यूं री भेंट

सुण बीरा!
बीखो पड़ै जद,
बैनां री थूं
लाज बचाजै,
क्रिसण जी रै दांई
बचन निभाजै
इण राखड़ली रो मोल
हुवै अणमोल
पण
रखपून्यूं नैं
म्हैं मांगूं थारै सूं
औ कौल
कै सरहद माथै
बैरयां सूं
मायड़भोम री
रक्षा करजै
मरतै दम तांई
थारो फरज निभाजै।
⌘⌘

मांयली पीड़

मंदरो-मंदरो
बरसै मेवड़ो,
नैणां बरसै नीर।

डाळ-डाळ
कूकै कोयलड़ी
लागै काळजै तीर।

पिवजी थे
परदेस बसो जी,
हिवड़ै भीतर पीर।

किणनैं कैवूं
किण विध धराऊं,
जोबन नैं म्हैं धीर।

काजळ टीकी
सुण बिसराई,
नीं भावै सिणगार।

अेकली तड़पूं
रात्यूं जागूं,
सूनी सेज निहार।

सावणियो औ
बीत्यो जावै,
सुणज्यो म्हारी पुकार।

बादळियै रै हाथै
भेजूं लिख'र
हाल हमार।
⌘⌘

सरोज देवल बीठू

हियै रो पंखेरू

रातां म्हारी
आंख्यां रो काजळ
आखै दिन
आंजती रैयी
आंगळी रा पेरवां पर
वा सुधरायी
कजराय रैयी

किसी परभात
राखै वो काळजियो
जिको
जागरत नैं
पाछो जगावै

बगत फगत इक कांटो हो
अर टिकटिक
इक बोली ई रैयी
मान अपमान
घर री पछीतां ऊपर री
होळी दिवाली ई खुलण वाळी
वाई पुराणी मजूस रैयी
नींतर आ जो
मिनख दीसै है

मन मांयला रोशनदान में इणरै
जोत जगै
अर धूणी धुकै
हर आखर में
म्हारै पड़ूत्तर बसै
उलझ्योड़ा केई हिवड़ां रा।

म्हैं वा कागद भूरी गट्टी
जिण पर लिपटे सुई समेट्या
धोळो सूत सुळझ्योड़ो-सो
भलो ही व्हियो
समझ सक्यो नीं कोई

हर पगडंडी कांटा वाळी
उरबाणां पगां सूं चाल रैयी
धूड़ धमासा दवा बण म्हारै
हिवड़ा री कसक सूं गळै मिली
जद सगळी गांठां ऊंडी
खुल-खुलनै अपणै आप पड़ी
अर कपास सूं ई हळकी हो
पाछो हियै रो पंखेरू
आक बीज ज्यूं उडण लागी!

⌘⌘

ठिकाणो :
एफ-321, ब्लॉक-6
रंगोली गार्डन
जयपुर (राज.)
मो. 7665377999

मोत्यां बिचली लाल

अनुमति व्है तो
बिना उधारी
इण दिन, इणीज घड़ी
अरपण कर दूं म्हैं
दो री मिती रो
ब्याज आज हिंदी नैं... !

रुपियां करतां
ब्याज व्है व्हालो
डिंगळ अर अपभ्रंश
डोकरी री
आ तो है
लाडेसर पोती !

पोहर दोपार री वेळा में
जद-जद ई
म्हैं बेमो लेवूं...
गळबहियां
आ घाल विलूंबै
म्हारै हिवड़ै छाजै
वां दो मोत्यां बिचली
लाल आ हिंदी.....

इधक तणी ढुळै लाड है
म्हारै काळजियै री
कोर रैईजै
पग पैंजणियां री
रुणझुण है,
घुंघरिया री घमक आ हिंदी !
⌘⌘

आतम परकासै

मनां ई मतवाळ अैथ
झूंपड़ी-गवाड़ अैथ
मिंतर अर मोहीला अैथ
नेह री बिरखा दिन-रात छै
डाह छै न वाह छै
न सुवारथां री झाळझोंट

मनवारी मनुहारां
मनवारी मनुहारां
करै दिन-रात छै
मोल ना, अमोल वेई
मिनखा व्यौहार दीसै...

ऊगता सूरज साम्हीं
निज़रां री आभ दीसै
इण दिन आथम्या ई
प्रभातियो प्रकास दीसै !

क्यूंकै
कबहुंकहवै की बात नहिं
कबहुं रोम-रोम कहि जावै।
कबहुं मन मंदिर मांहि बसै
वहै हिरदै बिच जोत सरूप जगै।

कबहुं असिधार पे जीवन यहै
कबहुं माखन सम निरमळ ही थवै।
कबहुं मनमीत अणपिछाण्या निसरै
मिळ जावै कदै नर आतम परकासै।
⌘⌘

विनोद सोमानी 'हंस'

औतार बण

तूं गंगाजळ री धार बण
तूं दुखी जणां रो प्यार बण

आतंकी फैलयां गळी-गळी
तूं ईं जुग रो औतार बण

हेत जगाण्यां दगो दे रैया
तूं सुरीली झणकार बण

खंजर भोंकै रोज पिछाड़ी
तूं तो पुहुपां रो हार बण

बंद कर दिया सैं दरूजा
तूं हेताळू मनवार बण

खाया घाव तन रा-मन रा
तूं वणां रो उपचार बण

लूट है जंगळराज भी है
तूं निबळां री हुंकार बण

ग्यान बांटै अठै सगळा
तूं प्रवचन रो सार बण

यार बणग्या सैं बेगाना
तूं सबळो सत्कार बण

ठिकाणो :
42/43, जीवन विहार कॉलोनी, आनासागर सरक्यूलर रोड, अजमेर
मो. 9351090005

भायला

कोई भी, कांई भी कै देवै भायला
बस में किणी रै रैयो नीं भायला

बैठै ऊंट कदै किण करवट
किणी रै हाथि में कांई नीं भायला

जीतग्यो फेरूं वो घोटाळा किंग
नैतिकता अबै रैयी नीं भायला

चारूं आडी फैली फूट अर हिंसा
अेकता री बातां सुणै नीं भायला

दिसाहीण हां, कांई नीं दीख रैयो
चिराग वस्या रैया नीं भायला

मोहन पुरी

(अेक)

बगत आळै बायरै ज्यूं बाजणो पड़सी अठै
रात बीत्यां सुपन लैरा जागणो पड़सी अठै

कुड़क कानां चढ भपारै पांगळो होवै मती
देख हिरणा भाजतांई भाजणो पड़सी अठै

कुण जुपावै गेल दिवलो रीस खूंजा में भरी
झेल बीखा रोज कांधै चालणो पड़सी अठै

गचगचै आ पिरथमी झूंठ री कारां तळै
सांच रो कीं कौल होठां राखणो पड़सी अठै

नूंत 'मोहन' सरवरां नैं काळजै धीजो भरो
ओ चाट्यां धूळ मांही मांजणो पड़सी अठै
⌘⌘

(दो)

घर बाखळ री शान डीकरी
बापूजी रो मान डीकरी

तितली रै ज्यूं रमती फिरती
सौरम रो लोबान डीकरी

ठिकाणो :
गांव-होड़ा, पो. खाचरोल
तहसील-मांडलगढ़
जिला-भीलवाड़ा
मो. 9672115032

चालै जूण गडारां माथै
केलू टटाटी, छान डीकरी

सगळी पीड़ा भरलै अंतस
उजळो देवळ थान डीकरी

गीत मुळकता आवै अधरां
सुख देवै मनमान डीकरी
⌘⌘

(तीन)

चमचमातो सूरजो जायां ढळै
लोह रो बळ आग में आयां गळै

हेत नैं जद ढाब लेवां बाथ में
राम–लिछमण प्रीत रळ भायां फळै

ठोकरां मत काढजै व्हा मावड़ी
राम रूस्यां रात में छायां बळै

भेंट देवां रोज माथा देस नैं
जीवणो कीं काम रो पायां तळै

देवता चावै धरा कद फेरणी
नीमड़ो पीबो करै दायां छळै

देख सूनी डीकरी मत छेड़ थूं
आपणै घर भी अठै बायां पळै

देख 'मोहन' नींद सूता रावळा
भूख रा सै रोग कीं खायां टळै
⌘⌘

(चार)

हेत सागै सबद ऊंडा तोल थूं
देख आंधी रीत नै कीं बोल थूं

व्है जठै जळ माछळी रै भाग रो
तड़फड़ै जद जूण मिसरी घोळ थूं

मारगां री लीक तूटै साव जद
ओपरा दरसाव सारा खोल थूं

कांवळां रा डार सागै भूंवतो
गणमणै आकास जद पर खोल थूं

छळ रिया व्है बागबां जद फूल नैं
कलम थारा साच नैं पंपोळ थूं

राम राजी राखणा रामारमी
वै लड़ै चुप राख थारो ढोल थूं

बादसाही सूंप दै सब राज नैं
भूल जावै नेम तो कर कोल थूं
⌘⌘

राजेन्द्र स्वर्णकार

माटी आज बुलावै रे

घर-धणियाणी बांदी ज्यूं क्यूं जूण गुमावै रे?
सुणै न घरवाळा दुख किणनैं जाय सुणावै रे?
धोरां री धरती रो काळजियो कुरळावै रे!
जायोड़ां नैं मुरधर-माटी आज बुलावै रे!!

थकां सपूतां मा रोवै तो फाटैलो असमान!
मा रा आंसू नीं पूंछै बेटा बै मरग्यै समान!
मातभोम भाषा खातर कुण आगै आवै रे?
माण बधावै, फरज निभावै, धीर बंधावै रे!!

याद बडेरां री कीरत करग्यां सिर ऊंचो होवै!
रंग कसूंबल-केसरिया सगळां रो मनड़ो मोवै!
माटी रै कण-कण सूं जौहर री झळ आवै रे!
मरजा! मती गुलामी कर! इतिहास सिखावै रे!!

माटी भासा अेक आपणी, के थारो के म्हारो?
इण घर रा जायोड़ां! मन सूं बैर-विरोध बिसारो!
सिंघ लड़ै तो बठै गादड़ा मौज मनावै रे!
हक आपां रो लूट-खोस आ दुनिया खावै रे!!

सब मूंडां नैं भासा मिलगी, आपां गूंगा तरसांला?
भावी पीढ्यां नैं रजथानी सरमां मरता अरपांला?
घणी सबूरी धीरज आतमघात कहावै रे!
बदळो राज, विधान; घात री बदबू आवै रे!!

ठिकाणो :
गिराणी सुनारां रो मोहल्लो
बीकानेर 334001
मो. 9314682626

जय जय जय राजस्थान

सुरंग सुरीलो सोहणो, सुंदर सुरग समान
रढियाळो रळियावणो, रूड़ो राजस्थान

जय जय जय राजस्थान! ओ म्हारा प्यारा राजस्थान!
ओ रूपाळा राजस्थान! ओ रींझाळा राजस्थान!
बिरमा जी थावस सूं मांड्या, थारा गौरव गान!!

ओ रंणबंका रजथान! ओ रंगरूड़ा राजस्थान!
ओ भुरजाळा राजस्थान! ओ गरबीला राजस्थान!
गावै वीणा लियां सुरसती, थारा कीरत गान!!

लुळ-लुळ सूरज किरणां इण माटी रो मान बधावै सा
हाथ जोड़ियां आभो अपलक निरखै; हुकम बजावै सा
मगन हुयोड़ो बायरियो कीरत में धुरपद गावै सा
नांव लियां ही मुरधर रो, मन गरब हरख भर जावै सा
कुदरत मा मूंढै मुळकै! हिवड़ां हेज हेत छळकै!!
मस्ती मुख-मुख पर पळकै!!!

इण माटी रो कण-कण तीरथ, सूरज, चांदो अर तारा
कळपतरु सै झाड़ बिरछ है; गंगा जमुना नद-नाळा
धोरां धोरां अठै सुमेरू; मिनख-लुगाई जस वाळा
सबदां-सबदां में सुरसत; कंठां-कंठां इमरत धारा
मुरधर सगळां नैं मोवै! इचरज देवां नैं होवै!!
सै इणरै साम्हीं जोवै!!!

वीरां शूरां री धरती री निरवाळी पहचाण है
संत सत्यां भगतां कवियां री लूंठी आण'र बाण है
आ माटी मोत्यां रो समदर, अर हीरां री खाण है
म्हैं माटी रा टाबरिया, म्हांनै इण पर अभिमान है
रुच-रुच इण रा जस गावां! जस में आणंद रस पावां!!
मुरधर पर वारी जावां!!!

⌘⌘

मनीषा आर्य सोनी

हेली म्हारी...

हेली म्हारी बात तो सुणती जाती अे
झूठै जगत री घात समझती जाती अे

काळ पड़्यो है मिनखपणै रो, अपणायत री ठौड़ कठै
कीर बबूल-सा लोग अठै है, प्रीत-प्यार रा फूल कठै
कटार बगल में, बघनख पैरया लोग परखती जाती अे
जूठै जगत री घात समझती जाती अे...

घूंघट छोड'र आखर पूज्या, मिल्यो ना कोई मोल अठै
मोती सूं मूंगा आंसू रहग्या रेत धूड़ रै मोल अठै
आंसू री स्याई कलम री ताकत, इतिहास नूंवो रच जाती अे
जूठै जगत री घात समझती जाती अे...

आखी जूण में तिरस नेह री, छेह भरयोड़ा लोग मिल्या
जणी घणी ना साथी कोई, प्रीत रा ना संजोग मिल्या
कुण हो थारो कुण हो परायो, सैनाण बतांवती जाती अे
जूठै जगत री घात समझती जाती अे...

जंग! जंग! कोयल गावै, फतवा जारी कागां रा
पिणघट-पिणघट पाणी चूवै, तिरस झुरै है घाटां रा
कूक में तू हुंकार भरती, साज बजांवती जाती अे...
⌘⌘

ठिकाणो :
मधुबन, 2 ई 16
ज. ना. व्यास कॉलोनी
बीकानेर 334003
मो. 9460173250

धरती फोरयो पसवाड़ो

धरती फोरयो पसवाड़ो अर ओढण चाली कसूंबल रंग
मां सुरसत री बीणा बाजी, आंख्या खोली राज भुजंग
जम्या भाग में निठुर हिमाळा, कुण जाणै कद बैसी गंग
कद पट खुलसी करमां रा कद मन होवैला मस्त मलंग
घणा सियाळा भोग्यां आवै, जियाजूण में ताप रो संग
जम्या हिमाळा पिघळ पड़ै जद, होवै अपणायत रौ संग
अेक सरीसो बखत ना होवै, कदै अमावस अर पूनम
कदै जेठ री लाय है ताती, कदै सावण रा बरसै घन
बळ सूं कोनी बदळीजै, बगत रा आपरा नेम धरम
बखत रा पाना धीर सूं फोरो, कैवै है रुतराज बसंत
रुत आवै रुत जावै, देवै ईं धरती नैं रूप-रंग
आप आपरी महत्ता सै री, हूवै आपरा रंग-ढंग

मनड़ै री धूणी

अजाण दिसा अर पथ अंधियारो
मन रो भरोसो इक पतियारो
करम करियां बिना थारी जूण अलूणी
लगन री जोत जागी मनड़ै री धूणी

गैरी काली रात आगै भोर रो उजास है
पतझड़ री रुत रै आगै बसंत सुवास है
बळ रै आगै टिकै ना विपदा
आया सरसी भोर सुहाणी

पग-पग कांटा अर पग थारा कोमल
जीवण जसनाथी खीरा निरत है हर पल
पण कुंदण-सी थूं निखर जावैला
अगन परीच्छा लेसी औ जग दूणी

काळ रै कपाळ माथै लिख इतिहास थूं
मैणत रा मोती मिलसी ऊंडै तळाव सूं
रोहिड़ै रा फूल खिलै है बिन छियां पाणी

⌘⌘

अभिलाषा पारीक 'अभि'

सरद-पून्यूं का चांद

मनैं पिव की ओळ्यूं आवै रे, सरद पून्यूं का चांद
मनैं पल-पल क्यूं तरसावै रे, सरद पून्यूं का चांद

मोटी-मोटी आंखड़ल्यां सूं झिर-मिर बरसै मेह
चांदा थारी चांदणी में, बरसै थारो नेह
हो म्हांनै पिव सूं प्रीत करा दे रे, सरद पून्यूं का चांद

चांदा थारी चांदणी, ऊभी जोवै बाट
डागळ्यां सूं झांकती, नैणां की मझधार
हो म्हांनै पिव सूं मेळ करा दे रे, सरद पून्यूं का चांद

हिवड़ै मांही उठै हूक-सी, पिया बसै परदेस
काची काया बणी-ठणी, देवै यो संदेस
हो म्हारै पिवजी सूं बात करा दे रे, बातड़ल्यां का चांद

तरसै थारी मरवण ढोला, कद आवोला देस
काजळ-टीकी झाला देवै, घूमर घालै देह
हो म्हारी सेजड़ली सिणगार दे रे, सरद पून्यूं का चांद

मनैं पिव की ओळ्यूं आवै रे, सरद पून्यूं का चांद
मनैं पल-पल क्यूं तरसावै रे, सरद पून्यूं का चांद
⌘⌘

ठिकाणो :
सी-30, अम्बाबाड़ी
जयपुर (राज.)
मो. 9829595559

छोटी-सी चिड़कली

आंगणियै में छोटी-सी चिड़कली, फुदकड़ा मारबा लागी
चीं-चीं-चीं अर चूं-चूं करती कुदड़का मारबा लागी

म्हां चिड़कल्यां, बाबोसा की जीव की जड़ी
म्हां चिड़कल्यां मायड़ का खून सूं पळी
घर की पोळी पिछवाड़ै तांई भागबा लागी...

अळ्यां-गळ्यां अर कूचां-कूचां कूदबा लागी
इमली-बरगद-पीपळ का डाळा झूलबा लागी
फुलड़ां-फुलड़ां सूं बात बणाती बूझबा लागी...

गीतड़ल्यां सूं घूं-घूं करती या टेरबा लागी
घूमर घालती घमकारां भरती नाचबा लागी
इंडी-पींडी-पणिहारी-चिरमी वारबा लागी...

आंखड़ल्यां सूं पिया का सुपना देखबा लागी
आड़तळ्यां सूं हथेळ्यां लाल सजायबा लागी
मोरयां सूं मिलबा या मोरणी-सी चालबा लागी...

मुखड़ो दरपण में देख्यां छुप-छुप निहारबा लागी
गजबण बेजां ही इब तो इतरायबा लागी
छोटी चिड़कली पांखड़ल्यां नै पसारबा लागी...

ईं चिड़कली नै झपटो मत उडबा द्यो दूर तक भाई
थांका बाग-बगीचां अर खेतां की जान छै साचांई
नान्हीं चिड़कली चौफेर कुदड़का मारबा लागी

चीं-चीं-चीं अर चूं-चूं करती कुदड़का मारबा लागी
आंगणियै में छोटी-सी चिड़कली, फुदकड़ा मारबा लागी।

⌘⌘

प्रो. (डॉ.) अजय जोशी

आस निरास भई

आज म्हारो मन के.अेल. सहगल री तरयां हो रैयो है। म्हनै सहगल साब रो बो जूनो गीत 'करूं क्या आस निराश भई' घड़ी-घड़ी याद आवै है। आज म्हारी भी आस निरास में बदळगी है। आज औ अेकसौ आठवीं बार रो फेरो है। जद म्हारी आस निरास हुयगी। अरे अेकसौ आठ बार में तो माळा रा सगळा मणका पूरा हो जावै तद भगवान ई राजी हुय जावै, पण कांई कर सकूं! औ साहित्य जगत घणो निष्ठुर है अर इण सूं जुड़ी सम्मान देवण वाळी संस्थावां तो कीं बेसी ई है। वांनै म्हारैजिसै लूंठै साहित्यकार नैं 'साहित्य शिखर शिरोमणि पुरस्कार' देवण नैं घणो जोर क्यूं आय रैयो है? म्हैं तो इण खातर अर इणी भांत रा दूजा नामी अर लोकचावा पुरस्कारां सारू घणी जोड़-तोड़ करी है। सागै सिफारिशां भी लगाई है। अठै तांई कै खुद रो खरचो लगावण नैं भी त्यार हो, पण ठाह नीं छेकड़लै टेम किणी अैरा-गेरा नत्थू खैरा नैं औ पुरस्कार देवण री घोसणा कर देवै। म्हैं तो बांनै अैरा-गैरा नत्थू खैर ई कैसां, थे चायै बांनै कांई भी कैवो। बै चायै कित्ता ई मोटा हुवो। चायै आप बांनै कांई भी कैवो। उण लोगां म्हारै पेट पर नीं, पण सम्मान पर लात मारी है। आप कैवोला कै थे पछै किसा मोटा साहित्यकार बणग्या जको थांनै पुरसकार अर सम्मान मिलै। थांनै किणी साहित्यिक गोष्ठी में ना तो सिरै पांवणा बणावै, ना ई खास पांवणा। थांनै ना ई किणी जळसै रा अध्यक्ष बणावै, अठै तांई कै थांनै तो आभार ज्ञापन रो मौको ई नीं देवै। घणै सूं घणो ताळी बजावण नैं अर भासण सुणण नै बुला लेवै। म्हैं कैवूं कै इणमें म्हारी कीं भी गळती नीं है। म्हांनै तो जद ई कार्यक्रम री सूचना मिलै, म्हैं तो तुरत ई उणनैं बधाई देवां। अर आ भी कैय देवां कै म्हारै लायक कोई काम है तो भोळावो। साम्हीं सूं उथळो आवै कै आप तो

ठिकाणो :
संपादक -मरु नवकिरण
बिस्सां रो चौक, बीकानेर
मो. 9414968900

आवो अर कार्यक्रम री सोभा बधावो। मतलब साफ है कै अठै आय'र ताळी बजावो। थे आ भी कैय सको हो कै थे कांई भी लिख्यो कोनी अर ना ई कीं छपायो। अरे पोथ्यां नीं छपी तो कांई हुयो। कवितावां, कहाणी, लेख, व्यंग्य आद घणा ई छपाया है। थे कैसो कै म्हैं तो थांरो छप्योड़ो कठैई पढ्यो ई कोनी। थे नीं पढ्यो तो म्हैं कांई कयं। आ तो पत्र-पत्रिकावां छापण वाळै संपादक री गळती है। म्हैं तो म्हारी रचनावां बांनै छपा'र ई भेजां। आप सोचता हुवोला कै छपा'र कियां भेजो? अरे भई, कम्प्यूटर सूं टाईप करवा'र प्रिंट निकळवा'र ई भेजां। इण प्रिंट रो मतलब छपावणो ईज तो हुवै है। इणरै पछै भी बै लोग कीं नीं करै तो म्हे कांई करां?

खैर, छोडो छपणै-छपावणै नैं। पुरस्कार अर सम्मान सारू छापा-छापी जरूरी थोड़ी है। बो तो जिणनैं मिलणो हुवै उणनैं ई मिलै। पुरस्कार मिलण री पंगत में सामल होवण सारू म्हैं भी घणा ई पापड़ बेल्या, चापलूसी करी अर सम्मान समारोह रै आयोजकां री ऑनलाईन चंपी भी करी अर ऑफलाईन चंपी में भी कसर नीं छोडी। जठै मौको मिल्यो, बठै ई उण सबां री तारीफ रा पुळ बांध्या। अेक-अेक सबद माथै चोखा-चोखा नीं चावता थकां भी कमेंट्स कर्‌या। उणां रै अेक-अेक सबद माथै ताळ्यां भी पीटी। उणां रै आगै-लारै घूम्या, उणां री सब सुख-सुविधावां रो ध्यान राख्यो। पछै कांई हुयो? म्हारो नांव सम्मान-सूची में लिखणै में काई दौराई हुयी! अेकसौ आठ बार इण जोड़-तोड़ रै पछै अबकी बार तो पक्को भरोसो हो। औ पुरस्कार म्हांनै ई मिलसी। इण खातर सम्मानित हुवण सारू अेक फूठरी-सी ड्रेस बणवाई ही। अेक पेसेवर फोटूग्राफर सूं शॉल, साफा आद पैर'र बकायदा फोटू ई खिंचवा लियो हो। उण अलग-अलग पोज सूं भोत सारा फोटू लिया हा। पूरो बींद बण्योड़ो हो। माळा म्हनैं ईज पैरावण री त्यारी ही। पक्को विस्वास हो कै अबकाळै तो म्हारै नांव री ई घोसणा हुसी। दूजै ई दिन मीडिया में छावण रो पूरो मत्तो हो। सोसल मीडिया पर तो अेक दिन पैलां ई डाल देंवतो अर कित्ती बधायां मिलती अर कमेंट्स अर लाईक्स मिलता, कित्ता फोन आवता। अै सम्मान देवण वाळा म्हारै सुपनै पर पाणी फेर दियो। बियां अेकसौ आठवीं बार भी म्हारै सम्मान आळै फूठरै सुपनै नैं तोड़ दियो। जिण लोगां ई म्हारै आडी लगाई, बां औ चोखो काम नीं कर्‌यो। इण बात सूं म्हैं घणो दुखी हुयो।

म्हारी आ दसा देख'र ग्यानी बाबो बोल्या, ''बेटा, सम्मान अर पुरसकार री मोह-माया नैं छोड दै। अै सब सांसारिक चीजां है, जिणमें आणी-जाणी कीं नीं है। इण सब सूं ऊपर उठ'र आपरो साहित्य कर्म करता रैवो। मतलब साफ है कै अेकसौ नौवीं बार पुरसकार लेवण री त्यारी कर।'' म्हासूं विदा लेंवता थकां बाबा कैयो, ''अबार म्हनै अेक मोटी धरमसभा में जावणो है। बठै म्हनै 'धरम शिरोमणि शिखर सम्मान' मिलसी। थे चावो तो इण सभा में म्हारै सागै पधार सको।''

इण भांत ग्यानी बाबा म्हारै घाव पर लूण छिडकता थका आगै बधग्या।

⌘⌘

शंकरसिंह राजपुरोहित

मुसाफ़िर रो व्यंग्य-सफ़र : सत्त बोल्यां गत्त है

व्यंग्य रो सुवाद लूण सरीखो खारो हुवै, पण उणरी उगत अर आंटो घी दांई खरो हुवै। जिण भांत ठस्योड़ै घी नैं काढण सारू आंगळी टेढी करणी पड़ै, बियां ई समाज में वापरयोड़ी विसंगतियां नै चौड़ै करण कै पछै वांनै कीं हद तांई मेटण सारू व्यंग्य रामबाण रो काम करै। आज व्यंग्य, साहित्य री सिरै विधा गिणीजै। देस-विदेस री पत्र-पत्रिकावां मांय छपण वाळी व्यंग्य रचनावां रा पाठक सै सूं बेसी लाधै। अबै तो इलैक्टोनिक मीडिया तक में व्यंग्य आपरी सजोरी पकड़ बणायली है। देस री वरतमान राजनीति री रोपटरोळ नै लेयनै कीं चैनलां माथै आवण वाळा कार्टून-चलचित्रां नै दरसक घणै चाव सूं देखै। व्यंग्य रै इण परिदरसाव नै देखां तो अभिव्यक्ति री आजादी रै सागै इण विधा में नवाचार ई हुय रैया है। कैवण रो मतलब, आज 'व्यंग्य' साहित्य री अेक स्वतंत्र विधा रै रूप मांय थापित हुय चुक्यो है।

इण दीठ सूं राजस्थानी सिरजण में ई व्यंग्य अबै रातो-मातो हुय रैयो है। इण अेक दसक मांय ई राजस्थानी में दसेक व्यंग्य-संग्रै आय चुक्या है, जदकै लारलै पचास बरसां सूं राजस्थानी में लिखीजतै व्यंग्यां री आज लग कुलजमा बीसेक पोथ्यां ई साम्हीं आय सकी है। व्यंग्य रै अैड़ै तोड़ै में आपरै पैलै व्यंग्य-संग्रै 'सत्त बोल्यां गत्त है' नैं राजस्थानी पाठकां रै हाथां पूगावणौ राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर' रै साहित्य-सफ़र रो महताऊ पांवडो मानीजणौ चाईजै। महताऊ इण वास्तै कै व्यंग्य-विधा री आंगळ्यां माथै गिणावण जोग पोथ्यां बिचाळै वांरै इण व्यंग्य-संग्रै मांय इंटरनेट अर इलैक्टोनिक मीडिया जैड़ा नूंवा-नकोर विसयां नै भेळीज्या है। दूजी बात आ कै राजेन्द्र 'मुसाफ़िर' राजस्थानी भासा रै लेखन पेटै घणा सावचेत है अर सागै

ठिकाणो :
कृपाळ भैरूं मिंदर चौक
सर्वोदय बस्ती, बीकानेर
(राजस्थान) 334004
मो. 7610825386

ई साहित्य री विविध विधावां जथा कहाणी, निबंध, कविता, व्यंग्य, अनुवाद आद में लगोलग सिरजणरत है।

लोकार्पित व्यंग्य-संग्रै 'सत्त बोल्यां गत्त है' मांय वांरा 18 व्यंग्य है, जका रै मार्फत आज री राजनीति री रापटरोळ, अनाचार अर भ्रष्टाचार सूं लीर-झीर होवतै लोकतंतर, धरम री आड में चालता आडम्बर अर पाखंड, साहित्य अर संस्कृति रै खेत्र में मचती गोधम, आभासी दुनिया रै अंतरजाळ में पज्यै मिनख री मरती संवेदनावां अर लोकतंतर रै चौथै खंबै रै नांव माथै प्रिंट अर इलैक्टेनिक मीडिया रै चैनलां री चालती चकलस रा बखिया उधेड़तां वांरा असल पोत चवड़ै करीज्या है। पोल में बाजतै ढोल रो ग्यान करावतो अर समाजू विसंगतियां, विडंबनावां अर विद्रूपतावां नैं उजागर करतो व्यंग्यकार 'सत्त बोल्यां गत्त है' रै धुर साच नैं साम्हीं राख्यो है। इण साच नै साम्हीं लावण खातर व्यंग्यकार कठैई माडाणी थरपीज्योड़ा साहित्यकारां रै आपसी संवादां रो सहारो लियो है, तो कठैई नीतबायरा नेतावां रै लोकदिखाऊ कार्यक्रमां अर भासणां रो। अेक कानी लोकतंतर री झूठी धजावां फरूकांवता मिजळा मिनखां रो माजनो व्यंग्यकार बांरै ई मूंडै सूं पड़वायौ है तो धरम रा ठेकेदारां री अक्कल ठिकाणै लावण सारू रामजी नैं कागद भी लिख्यो है।

'नेताजी : पधारो म्हारै देस' व्यंग्य में अेक ओवरफ्लाई पुळ रै उद्घाटण सारू आयोड़ै नेताजी रा हाजरिया-पाखरियां री चमचागिरी नैं चौड़ै करीजी है। अैड़ा उद्घाटण समारोह इण देस में नितूगै होवता ई रैवै अर नेता लोग पधारता ई रैवै। पण जनता री परवा कुण करै! वा जावै भाड़ में। अबै जिण पुळ रो उद्घाटण करण सारू नेताजी पधारया है, वौ तो लारलै दो महीनां सूं चालू ई है। ''इण सवाल रो होळै-सीक उथळो देंवता चीफ इंजीनियर बोल्यो, ''वो तो टेस्टिंग रो बगत हो...। इयां मानल्यो कै वीं बगत पुळ री जांच-पड़ताल हुवै ही।'' वांरै कैवण रो म्यानो औ ई हो कै टेस्टिंग री बगत आम मिनख अर पुळ रो उजाड़ हुवण में कीं आंट कोनी। उद्घाटण रै सैं-बगत जे कीं ऊंच-नीच हुय ज्यावै तो ठाह नीं कित्ताक री नौकरी माथै तलवार चाल ज्यावै।'' *(पृष्ठ 16)*

दो दिन री तफरी रै सागै सरकारी दफ्तरां में पांच दिन रो हफ्तो हुयां पछै ई लोगां रै काम सारू बाबू अर अफसरां रै बगत रो तोड़ो अजै मिट्यो कोनी। कम्प्यूटर माथै भलांई वै तास रो गेम खेलो कै पछै मोबाईल माथै नेट-चेट में लाग्या रैवो, पण काम अटकावण री जाणै सौगन खायोड़ी है। 'बगत री महिमा' व्यंग्य में परिवहन लाईसेंस रिन्यू करावण सारू डोकरो मनीराम चार-पांच गेड़ा काट चुक्यौ है, पण मजाल है काम पार पड़ जावै। कम्प्यूटर साथै ताश-पत्ती में उळझ्योड़ै बाबू रो सीधोसट जबाब देखो, ''थांनै दीसै कोनी, कागदां रो ढिगलो लाग्यो पड़्यो है? काम तो आपरै ढब सूं ई हुयसीक नीं! थांरै चकारिया काटण सूं तो बेगो हुवै कोनी! खुद रै सागै म्हारै मगज रो ई धेलो करण आयग्या! म्हनै मरण रो ओसाण नीं है अर थांनै फगत थांरै लाइसेंस री ताकड़ लागरी है। धीजो नीं राख सको तो अेजेंट नैं भोळाय देंवता, बापड़ो घरां ताणी पूगाय देंवतो। बियां इण औस्था में थांनै लाइसेंस सारू बूझै ई कुण है?'' *(पृष्ठ 24)*

इणी भांत 'छपास रो वायरस' व्यंग्य में बिसनाराम अेक अैड़ो पात्र है, जिणनै पईसां रै

जोर सूं साहित्य में अमर हुवण रो जोम है। चोखी भली अंग्रेजी स्कूल रो डायरेक्टर बिसनाराम लाख समझायां उपरांत ई कविता-सिरजण रै बिणज में पड़ जावै अर आपरै सागै-सागै स्कूल रो ई भट्ठो बैठाय न्हाखै। बीं री छपास री भूख नैं व्यंग्यकार इण भांत जगावै, ''तो, बिसनाराम अबै हुयग्या, बी. आर. बच्चन! साहितकारां री भेळप सूं बी.आर.बी. रै हियै मांय साहित रो चानणौ हुयो, वो झबका मारै अर आठूं पौहर भीतर अेक ई चीस—'साहित लेखन रै पेटै म्हारै खातर ई माळा, दुसाला, ओळूं रा अैनाण अर ताळियां री गड़गड़ाट हुवै'!'' *(पृष्ठ 31)*

इलैक्टोनिक मीडिया में कूड़-कपट रै खेल में चैनलां री बधती राफड़-लीला अर टीआरपी में आज रो युवा आपरो भविष्य देख रैयो है। 'म्हैं बणस्यूं चौथो थंबो' व्यंग्य रै पात्र रै बाप नैं आपरै बेटै रै जॉब अर भविस री चिंता है, पण बेटो पूरै दिन चैनलां री चकचक सुणतो रैवै अर नैछै सूं कैवै, ''पत्रकार लोकतंतर रो चौथो थांबो हुवै... पण हुवै तो थांरै-म्हारै जैड़ो समाजू मिनख ई! वो साधु-संन्यासी तो हुवै कोनी! तो पछै मोटा अर के नेन्हा; सगळा अफसर-कारिंदा री पींड्या पत्रकारां नैं देख क्यूं धूजै? पत्रकार खुल्लै-सांड दांई घूमै-फिरै-चरै। जकै काम खातर थे सात दिन चक्कर काटस्यो वीं काम नैं पत्रकार सात मिनट कोनी लगावै। ईं बजारवादी जुग में पत्रकार री खरी कमाई रो अंदाजो थे नीं लगा सकोगा।'' *(पृष्ठ 38)*

संग्रै में अेक और सांतरो व्यंग्य है 'हादसां सूं ग्यान री गंगा'। इणमें व्यंग्यकार रो मानणो है कै आदमी आखड़्यां बिना सावचेत कोनी होवै, इण वास्तै ग्यान बधावण सारू हादसां रो होवणो जरूरी है। समाज रै न्यारै-न्यारै खेत्रां में होवण वाळै हास्यास्पद हादसां रा हवाला देंवता थकां वै आपरी लेखक-बिरोदरी सागै हुवण वाळै हादसां बाबत लिखै, ''लिखारां री जिंदगाणी तो हादसां रो दूजो नांव ई है। रचना लिखण सूं सम्पादक नैं भेजण ताणी लुगाई-टाबरां रा टौंट रा झटका सहण करै। संपादक छापै ई नीं, तो दूजो झटको। भागजोग सूं छप ज्यावै अर कोई बांचै नीं तो फेरूं जबरो झटको। सांतरी रचना छपै अर मानीता साहितकारां सूं साबासी नीं मिलै तो ठाडो तसियो। छेकड़लो हादसो हुवै खुद रा रोकड़ा सूं पोथी छपावण रो। ईं पछै तो ग्यान री गंगा बैवणी सरू हुवै...। *(पृष्ठ 42)* हादसा होवण रो अेक कारण खाद्य अर पेय पदार्थां में महामिलावट भी है। आ मिलावट अबै आपरी हदां लांघगी है अर दूजा समाजू सरोकारां में ई ठौड़-ठौड़ देखण नै मिल जावै। मिलावट करण वाळा मिजळा मिनख फीटा अर नकटा न्यारो बण जावै। 'मिक्स ऊपरां री-मिक्स' व्यंग्य रै मार्फत व्यंग्यकार बतावणो चावै कै अबै दूध में पाणी नीं, पाणी में दूध रळाईजण लागग्यो है। अेक अैड़ै ई दूधियै नैं दिनूगै-दिनूगै ओळमो दिरीज्यो तो, पाड़ोसियां रा बरतन-भांडा मांय दूध रितावतो वो मुळक्यो अर बेसरमी सूं उथळो दीन्हो, ''बाऊजी, जुग-सार चालणो पड़ै, खालिस दूध पचावणियां ई कोनी रैया अबै! म्हैं तो ल्या-देस्यूं, पण अपच हुय ज्यावैगी अर डागदर रो खरचो बध ज्यावैगो तो म्हनै ओळमो मत देया। थांनै स्यात ठाह कोनी कै कॉकटेल बण्यां पछै पीवण वाळी चीज रो मजो ई कीं निराळो हुयज्या है! *(पृष्ठ 44)*

फेसबुक अर व्हाट्सअेप रै बधतै चाळै माथै व्यंग्य है, 'फ्रेंड्स अर भायला'। इणमें फ्रेंड्स अर भायलां रो मांयलो आंटो अर अंतर बताईज्यो है, तो कम्प्यूटर वाळै 'होरोस्कोप में

स्कोप' नै उजागर करता थकां व्यंग्यकार रो मानणो है कै अबै पंडत अर पतड़ां वाळो जमानो लदग्यो अर जलमकुंडळी री ठौड़ होरोस्कोप में स्कोप अर पैकेज रो जमानो आयग्यो है। ब्यांव-सगपण रो आधार ई 'पैकेज' बणग्यो है।

संग्रै में अेक व्यंग्य रो सिरैनांव तो 'बळत री औखद' है, पण पूरो व्यंग्य पढ्यां ठाह पड़ै कै बळत री तो कोई ओखद है ई कोनी। आ ना तो मिटै अर ना जक लेवण देवै। बळत मिटावण सारू डॉक्टर अर रोगी री तो छोडो, नीतबायरा नेतावां, सांगी साहित्यकारां अर लोकदिखाऊ समाजसेवियां तकातक नै ऊंधा-सूंधा काम करणा पड़ै। इणी भांत व्यंग्य 'नाक बचावण री जुगत' में ई लोग ऊंधा अफाळा खावता निगै आवै। नाक रो सवाल लोगां नैं जीवण कोनी देवै अर इणनै बचावण री जुगत में वै नीं-नीं जैड़ा करमकांड कर नाखै। 'आजादी रै दरखत रा फळ' में ई व्यंग्यकार निकम्मा अर निरलज लोगां माथै व्यंग्य-बाण बरसांवता बतावै कै कियां गांधी-सुभाष अर भगतसिंह जैड़ा जोगा अर जोरावर लोग आजादी रूपी बीज चोभ्यो हो, पण औ बीज जद दरखत बण्यो, तो इण रा फळ आज नाजोगा अर नालायक लोग खा रैया है।

संग्रै रै छेहलै व्यंग्य रै रूप में रामजी नैं 'अेक चिट्ठी' लिखीजी है, जिणमें व्यंग्यकार रामजी सूं अरदास करै, ''सापुरसां सूं सुणी कैबत है कै अल्लाह अर ईसरो अेक ई है। जे अेक है तो आ राड़ कुण घाल मेल्ही है। अबै म्हनै साचली आ लखावै कै थे न्यारा-न्यारा दो ई हो। सौ-कीं थांरै ई हाथां में है। थै आपसरी में सल्ला-तल्ला करनै अजै ताणी मामलो सलटायो क्यूं कोनी? म्हारो मोटो सवाल औ ई है। *(पृष्ठ 95)*

राजेन्द्र शर्मा रै इण संग्रै रै व्यंग्यां री चरचा पछै थोड़ीक चरचा वांरै व्यंग्य रै आंटै अर व्यंजना बाबत ई करणी लाजमी लखावै। राजेन्द्र शर्मा मुसाफ़िर नैं व्यंग्य लिखणै री लकब है। वां कनै व्यंग्य लिखण रो केई आंटा है। जथा कठैई कथात्मक रूप में दो जणां रै आपसी संवाद सूं समाजू विसंगतियां अर विडंबनावां नैं चवड़ै करणी तो कठैई धोळपोसिया नेतावां अर समाजसेवा रा सांग धरणियां सूं खुद रै मूंडै ई भासण दिरवायनै अणजाणपणै मांय वांरी स्वारथी सोच री पोल खोलणी। अेक कानी 'मुसाफ़िर' रै व्यंग्य री गाडी नैछै सूं चालै। कठैई हळफळाट कोनी। किणी अेक ई विसय रै विविध पखां री विसंगतियां नैं चौड़ै लावण री खिमता वां मांय है, तो दूजै पासै वांरी भासा ढळवां है, सबद पाणी री भांत ढाळोढाळ चालै। व्यंग्य बांचती बगत पाठक कठैई बोरगत मैसूस नीं करै। इणरै टाळ जिण भांत अेक बैद नैं इण बात रो अंदाजो होवै कै किणी रोगी नैं कोई खारी ओखद देवण सारू उण मांय कित्ती मात्रा में मीठास री जरूरत है का पछै किणी चातरक रांधण नैं औ ठाह हुवै कै बेसवार में मिरच-मसाला किण हिसाब सूं पड़णा है, उणी भांत राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर' नैं इण बात री पूरी सोझी है कै व्यंग्य में हास्य अर विनोद आटै में लूण खटावै जित्तो ई होवणो चाईजै। कुल मिलायनै 'सत्त बोल्यां गत है' राजेन्द्र शर्मा रै व्यंग्य री मारक-खिमता रो पैलड़ो मंडाण है। इण मंडाण नैं देखतां भरोसो है कै वांरा व्यंग्य रूपी बादळां सूं धारोधार औसरैला अर वै भविस में ई आपरी सजोरी लेखनी सूं राजस्थानी रै व्यंग्य-साहित्य नैं हरयो-भरयो करता रैवैला।

⌘⌘